मुसलमान
परेशान
क्यों
?
Part
1
अहले सुन्नत व जमात
मिनजानिब:
रज़वी टीम, इण्डिया
मुसन्निफ
अनवर रज़ा खान अज़हरी

हम्द व सना

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

ऐ अल्लाह, तेरी जात बेमिस्ल व यकता है, तू हमेशा से है, हमेशा रहेगा। तू एक है, पाक है, तू ही इबादत के लायक है। तू ही सारी चीजों को बनाने वाला है। तू ही सारे जहां का रब है। या अल्लाह तू मेरा खुदा, मैं तेरा बंदा, तूने मुझे इबादत के लिए बनाया और कुरआन मेरे हिदायत के लिए उतारा, नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तरीका ए सुन्नत के लिए भेजा, वलियों का सिलसिला निसबत और मोहब्बत के लिए कयामत तक जारी रखा ताकि मैं कुरआन से हिदायत पाऊँ, नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सुन्नतों को अपनाऊं और वलियों से निसबत और मोहब्बत करने वाला बन जाऊं, ऐ मेरे रब तेरा एहसाने अज़ीम है की आदम अलैहिस्लाम को अपने कुदरत वाले हाथ से बनाया और उनकी औलाद हमे बनाया

और सबसे बड़ा एहसान ये है कि जिस हबीब को तूने अपने नूर की तजल्ली से बनाया उसका उम्मती हमे बनाया यानी अशरफुल मखलुकात बनाया और शुक्र है तेरी सारी नेमतों का जिसे मैं शुमार नहीं कर सकता। या अल्लाह तुझ से अज़ीम कोई नही ।

दरूद व सलाम हो उस नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जिसे तूने अपनी नूर की तजल्ली से बनाया और सारे जहां के लिए रहमत बनाकर हम गुनाहगार उम्मतियों का नबी बनाया दरूद व सलाम हो उस नबी के आल पर जिस का सिलसिला तूने कयामत तक जारी रखा, और सलामती हो उन तमाम मोमिनो मोमिनात पर जिन्होंने तुझे राज़ी किया।

अर्ज़े नाशिर

आज फ़ितनों, जहालत, दुनियादारी और ज़माना का आख़िरी दौर है, आज मुसलमान परेशान नजर आ रहे हैं। सभी जानते हैं कि मुसलमान परेशान है लेकिन ये कोई नही जानता कि मुसलमान क्यों परेशान है? जब मुसलमान जान जायेगा कि परेशानी की वजह क्या है तो वो उस परेशानी से बच जाएगा। परेशानी की सबसे बड़ी वजह ईमान का कमज़ोर होना है। ईमान हक़ीक़त में दीनदारी का नाम है जो इस दौर के मुसलमानों के पास नही है। इस दौर के मुसलमानो के पास दीनदारी नही बल्कि दुनियादारी है। आज मुसलमान कीमती वक़्त और सेहत सिर्फ दुनियादारी में बर्बाद कर रहा है। आप देख सकते है, आज मुसलमानों के पास दुनिया की हर वो फ़ानी सामान मौजूद है जिसका ताअल्लुक़ आख़िरत से नही जैसे, टीवी, कार, बाइक, फ्रिज़, ए.सी, कूलर, गीज़र, मोबाइल, रहने का मकान, दौलत कमाने का दुकान, सोने के लिये नर्म बिस्तर, शोहरत का लिबास, नाफ़रमान औलाद वगैरह ये सब अल्लाह से दूर और आख़िरत से दूर करने वाली सामान है। एक हदीस में है **ये दुनिया मलऊन (लानत के काबिल) है और दुनिया की सारी चीजें मलऊन है सिवाय उसके जो अल्लाह के लिए है यानी आख़िरत के लिए,** जैसे ईमान, कुरआन , इल्म, अमल, तक़्वा, सब्र, अख़लाक़, सुन्नत तरीका, परहेज़गारी, नेकी वगैरह।मगर अफसोस आज मुसलमान अपने घर मे लानती समान भर दिया है, अपने पेट को हराम खाने का कूड़ा-दान बना दिया है, अपने जिस्म को शोहरत का पुतला बना लिया है। दीन से दूर होकर दुनिया मे चला गया है। जबकि एक हदीस में आया है कि **हुज़ूरﷺ फ़रमाते है ये दुनिया काफ़िर के लिए जन्नत और मोमिन के लिये कैदखाना है (मुस्लिम शरीफ)।** मगर अफसोस आज मुसलमान कैदी की तरह नही बल्कि काफिरों की तरह ज़िन्दगी गुज़ार रहा है। एक हदीस में है जो हज़रते सलमान फ़ारसी रदिअल्लाहु अन्हु से रिवायत है, हुज़ूरﷺ इरशाद फ़रमाते हैं: **"जो नर्म व मुलायम बिस्तर पर सोए और लिबासे शोहरत पहने और आलीशान सुवारी पर सवार हो और मन पसन्द खाने खाए वोह जन्नत की खुश्बू भी नहीं सूंघ सकेगा।"** सरकार के इस फरमान के आईने में आप अपना जायजा लें।

आपका ख़ादिम, अनवर रज़ा खान अज़हरी, 9534124663

फेहरिस्त

किताब किस नियत से पढ़ें	6
परेशानी की वजह नाफरमानी और गुनाह	6
हर काम अल्लाह के हुक्म से	6
ज़ालिम बादशाह (मोदी) अल्लाह के हुक्म से है	7
बादशाहों (मोदी) को बुरा न कहो बल्कि तौबा करो	7
तौबा न करने वाला ज़ालिम है	7
पहले तौबा उसके बाद बख़्सिश	8
अपनी हालत खुद से बदलो	8
परेशानी, 3 चीजों की हिफ़ाजत नहीं करने के वजह से	8
परेशानी 2 चीजों को छोड़ने के वजह से	8
कुरआन में है	9
आदमी ज़रूर नुक़सान में	9
इस्लाम की हक़ीक़त	10
इस्लाम को मानने वाले 3 तरह के कौम	11
इंसान की हक़ीक़त	12
इंसान की 2 किस्में	13
मुसीबत/परेशानी की हक़ीक़त	14
शैतान की दरख्वास्त	15
इंसानों के दिल में शैतान का घर	15
दिल जिस्म का बादशाह	16
शैतान जिस्म का प्रधानमंत्री	16
परेशानी/मुसीबत की 2 किस्मे	17
5 तरह के लोगो के साथ अल्लाह ग़ज़बनाक होता है	18
हराम खाना परेशानी की वजह	19
हराम और हलाल में मिलावट के वजह	19
वहाबी या गैर मुकल्लिद से मेल जोल से परेशानी	19

अंग्रेजी दवा नापाक : आ़ला हज़रत	19
परेशानी 6 गुनाहों के वजह से	20
परेशानी 15 गुनाहों के वजह से	20
बेनमाजिओं को 15 अज़ाब	21
ज़िना (नाजाइज़ सेक्स) से 6 परेशानियां	22
ज़िना (सेक्स) और सूद के वजह से तबाही	22
रुपया जमा करने वाले पर 4 मुसीबतों का आना	22
माल जमा करने वाले नुकसान में	23
दुरुद न पढ़ना परेशानी की वजह	23
नेकी का हुक्म न देना और गुनाहो से न रोकना परेशानी की वजह	23
परेशानी की वजह दुनिया हासिल करना	23
ढोंगी बाबाओं पर भरोसा	24
दुनिया को पूजने वाले लोग	24
सिर्फ ख्वाहिशात से मोहब्बत करने वाली कौम	25
जन्नत की खुश्बू भी नहीं सूंघ सकने वाले लोग	26
दाढ़ी मुड़वाने वाला बेनसीब	26
ये उम्मत सूअर और बन्दर बन जायेंगे	26
नाफरमानी और गुनाह	26
गुनाह तीन क़िस्म के हैं	27
गुनाहगार (फ़ासिक) की किस्में	28
शैतान की नाफरमानी शोहरत के वजह से	28
गुनाह से नुक़सानात:	29
गुनाह के असरात	29
गुनाह की दो किस्में है-	30
गुनाहे कबीरा की तादाद बहुत ज्यादा है	31
गुनाहों से दुनियावी नुकसान:-	31
हर गुनाह की दस बुराईयां हैं	32
दुनियादारी का नाम ही गुनाह है	32

दुनिया की मुहब्बत सब से बड़ा गुनाह है	32
दुनिया की मुहब्बत तमाम गुनाहों की जड़ है :-	33
गुनाह शैतान कराता है	33
शैतान के रास्ते	33
ख्वाहिश वालो पर सख़्त अज़ाब	34
कुरान से हुक्म नही मान रहे है	34
नाफ़रमानों को जिल्लत का अज़ाब	36
अहादीस में परेशानी का सबब	36
गुनाहों के वजह से अज़ाब	36
मोबलिचिंग दुनियादारी के वजह से	37
दुनियादारी के वजह से कलमा रद्द	37
दीन के नाम पर दुनिया कमाना	37
नाम का मुसलमान	38
तरह-तरह के बीमारी,ज़ालिम बादशह और दुशमन	38
आपस में लड़ाई की वजह	39
बुरे लोगो के साथ नेक लोग भी हलाक	39
परेशानी की दूसरी सबसे बड़ी वजह दुनियादारी	40
दुनिया की हक़ीक़त कुरान में	40-41
दुनिया मोमिन के लिए कैदखाना	42-45
शैतान दुनिया के साथ है	46
दुनिया की मोहब्बत अल्लाह से दूर कर देती है।	46
शैतान दुनिया के जरिये से गुनाह कराता है	46
अल्लाह की रहमत दुनियादर के लिए नही	47
परेशानी की वजह दुनिया हासिल करना	47
दुनियादार कौम से अल्लाह की नाराजगी	48

किताब किस नियत से पढ़ें

अगर आप परेशान हैं तो आज जान लें कि परेशानी नाफ़रमानी यानी गुनाहों के वजह से है, गुनाह जिहालत और लालच की वजह से है । जिहालत और लालच शैतान की तरफ से है , अगर इंसान जिहालत से बच जाए और लालच में सब्र कर ले तो वो शैतान से बच कर गुनाह करना छोड़ देगा, जब शैतान से बच जाएगा तो परेशान नही होगा , कोई बीमारी नही होगी, कोई ग़म नही होगा। सब्र की फ़ज़ीलत कुरआन में यूँ है : **बेशक अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है** (सूरह बक़रह, आयत न. 153) और लालच की मज़म्मत कुरआन में यूं है, **अल्लाह फ़रमाता है : तर्जमा : वह जो अपनी ख्वाहिश का ताबे (ख्वाहिश के मुताबिक जीने वाला) हुआ, तो उसका हाल कुत्ते की तरह है।** (सूरह आराफ, आयत न 176) इन दोनों आयतों में ग़ौरो फ़िक्र करने से पता चलता है कि लालच यानी ख़्वाहिशात वाला ज़हर जो शैतान की तरफ से है और सब्र जो कि दवा है अल्लाह की तरफ से है। हर इंसान परेशान है लालच यानी ज़हर अपना लेने की वजह से है अब इसका इलाज सिर्फ सब्र है। सब्र को दवा की तरह इस्तेमाल करे । सब्र की 4 किस्में हैं: 1. गुनाहों से सब्र 2. लालच(ख़्वाहिशात) में सब्र 3. रिज़्क की तंगी में सब्र 4. मुसीबत में सब्र। जिसने भी सब्र को अपना लिया वो कभी परेशान नही होगा और कभी नुकसान में नही रहेगा। आगे पढ़ें परेशानी की वजह

परेशानी की वजह नाफ़रमानी और गुनाह

कुरआन और अहादीस को आईना बना कर अपने हर काम को देखो सब काम अल्लाह और उसके रसूल ﷺ के फरमान के ख़िलाफ कर रहे है। इसी लिए मुसलमान परेशान है।

हर काम अल्लाह के हुक्म से

सबसे पहले ये जान ले कि हर काम अल्लाह के हुक्म से ही होता है। कुरआन में है : **उसके (अल्लह के) हुक्म से आसमान और ज़मीन क़ायम हैं।** (सूरह रूम, आयात 25), कुरआन में दूसरी जगह है **"उसी के हैं जो कोई आसमानों और ज़मीन में हैं, सब उसके (अल्लाह के) ज़ेरे हुक्म हैं"** ।(सूरह रूम, आयात 26)

आगर किसी के साथ बुरा हुवा तो वो भी अल्लाह का हुक्म से हुवा क्योंकि बुरा इसलिये हुवा की वो उसी लायक था, अगर किसी के साथ अच्छा हुआ तो वो भी अल्लाह के हुक्म से हुवा क्योंकि वो उसी लायक था। अल्लाह फ़रमाता है **: जो शुक्र करे वह अपने भले को शुक्र करता है और जो नाशुक्री करे तो बेशक अल्लाह बेपर्वाह है।** (सुरह लुकमान, आयत न. 12)

ज़ालिम बादशाह (मोदी) अल्लाह के हुक्म से है

हज़रत अबूदर्दा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : नेकी का हुक्म देते रहना और गुनाहों से रोकते रहना नहीं तो अल्लाह तआला तुम पर ऐसे जालिम हाकिम (मोदी सरकार जैसा) मुकर्रर कर देगा । जो तुम्हारे बुजुर्गों का ऐहतिराम नहीं करेगा, तुम्हारे बच्चों पर रहम नहीं करेगा, तुम्हारे बड़े बुलायेंगे लेकिन उनकी बात नहीं मानी जायेगी, वह मदद तलब करेंगे मगर उन की मदद नहीं की जायेगी और वह बख़्शिश तलब करेंगे मगर उन्हें नहीं बख़्शा जायेगा । (सुन्नी फजाईले आमाल, सफा न. 792)

बादशाहों (मोदी) को बुरा न कहो बल्कि तौबा करो

हज़रत मालिक बिन दीनार फरमाते हैं कि तौरेत शरीफ़ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया है कि बादशाहों के दिल मेरे क़ब्ज़े में हैं जो मेरी हुक्म मानेगा मैं उस के लिये बादशाहों को रहमत बनाऊंगा और जो मेरी मुखालफत करेगा उस के लिये उन को अज़ाब बनाऊंगा फिर तुम बादशाहों को बुरा कहने में मश्गूल न हो बल्कि मेरी बारगाह में तौबा करो मैं उन को तुम पर महरबान कर दूंगा। (तम्बीहुल मुग्तरीन, अल बाबुल अव्वल, सब्रहम अला जोरुल हुक्काम, स. 43)

तौबा न करने वाला ज़ालिम है

अल्लाह फ़रमाता है : **क्या ही बुरा नाम है मुसलमान होकर फ़ासिक़ कहलाना और जो तौबा न करें तो वही ज़ालिम हैं**। (सूरह हुजरात, आयत न. 11)

पहले तौबा उसके बाद बख़्सिश

अल्लाह फ़रमाता है तर्जमा: **जिन्होंने गुनाह की और उनके बाद तौबा की और ईमान लाए तो उसके बाद तुम्हारा रब बख्शने वाला मेहरबान है।** (सुरह-आराफ, आयत न.153)

अपनी हालत खुद से बदलो

अल्लाह फ़रमाता है तर्जमा: **बेशक अल्लाह किसी क़ौम से अपनी नेअमत नहीं बदलता जब तक वह खुद अपनी हालत न बदल दें और जब अल्लाह किसी क़ौम को अज़ाब देना चाहे तो वह फिर नहीं सकती और उसके सिवा उसका कोई हिमायती नहीं** (सूरह राअद, आयत न. 11)

परेशानी, 3 चीजों की हिफ़ाजत नहीं करने के वजह से

हाकिम और दैलमी ने हजरत अबू- सईद रदिअल्लाहु अन्हु से रिवायत किया है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया: तीन चीजें ऐसी हैं जो शख्स उन चीजों की हिफाजत करेगा अल्लाह तआला उसकी दुनिया और दीन दोनों की हिफाजत फरमाएगा। और जो शख्स उन बातों पर अमल नहीं करेगा अल्लाह तआला उसके किसी काम की हिफाजत नहीं फरमाएगा। (1) इस्लाम की इज्जत (2) मेरी इज्जत (3) मेरे अहलेबैत की इज्जत (सवाइके मुहर्रका सफा 769)

परेशानी, 2 चीजों को छोड़ने के वजह से

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है फरमाते है मैंने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना की "ऐ लोगो मैं तुम्हारे बीच 2 चीजें छोड़ी है 1. अल्लाह की किताब यानी कुरआन और 2 मेरी अहले बैत" जब तक तुम उनका दामन थामे रहोगे गुमराह न होगे। (जामे तिर्मिजी, जिल्द 6, बाब किताबुल मनाकिब, हदीस-3786)

कुरआन में है

अल्लाह फ़रमाता है : **क्या मैं तुम्हें बतादूँ कि किस पर उतरते हैं शैतान, उतरते हैं हर बड़े बोहतान (झूठ) वाले गुनहगार पर।** (सूरह सूरा, आयत न. 221-222)

अल्लाह फ़रमाता है : **बेशक तुम्हारे रब को अज़ाब करते देर नहीं लगती** (कंजुल ईमान, सुरह अनाम, आयत न. 165)

अल्लाह फ़रमाता है : **हम ज़ालिमों में एक को दूसरे पर मुसल्लत करते हैं बदला उनके किये (यानी गुनाह का)।** (सूरह - अनआम, आयत न. 129)

अल्लाह फ़रमाता है : **जो तौबह न करें तो वही ज़ालिम हैं** (हुजरात, आयत 11)

अल्लाह फ़रमाता है : **छोड़दो खुला और छुपा गुनाह करना, वो जो गुनाह करते हैं जल्द ही अपनी किये की सज़ा पाएंगे।** (सूरह - अनआम, आयत न. 120)

कुरआन में है : **बेशक हम उस शहर वालों पर आसमान से अज़ाब उतारने वाले हैं बदला उनकी नाफ़रमानियों का।** (सूरह-अंकबूत, आयात न. 34)

अल्लाह फ़रमाता है**: जो मुसीबत पहुंची वह इसके सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया (यानी खुद से गुनाह किया)** । (सूरह शूरा, आयत न. 30)

कुरआन में है : बेशक जो ईज़ा (तकलीफ) देते हैं अल्लाह और उसके रसूल को उनपर अल्लाह की लअनत है दुनिया और आख़िरत में और अल्लाह ने उनके लिये ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है। (सूरह अहजाब, 57)

परेशानी की वजह : इस दौर में ज्यादातर लोग इस्लाम के खिलाफ काम करके अल्लाह और उसके रसूल को तकलीफ दे रहे है जिसके वजह से अल्लाह की लानत उनपर यही परेशानी की वजह है

आदमी ज़रूर नुक़सान में

अल्लाह फ़रमाता है : **बेशक आदमी ज़रूर नुक़सान में है, मगर वो नहीं जो**

ईमान लाए और अच्छे काम किये और एक दूसरे को हक़ की ताक़ीद की और एक दूसरे को सब्र की वसीयत की। (सूरह अस्र, आयत न. 2-3)

अल्लाह फ़रमाता है : **तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे खुदा में अपनी प्यारी चीज़ खर्च न करो। (**सूरह- इमरान, आयत न. 92)

अल्लाह फ़रमाता है : **हक़ से बातिल को न मिलाओ और दीदह व दानिस्ता (जान बूझकर) हक़ न छुपाओ** (,सुरह बक़रह, आयत न. 42)

परेशानी की वजह : आज मुसलमान परेशान इसलिए है क्योंकि वो भलाई से दूर है वो इसलिए कि अल्लाह के राह में खर्च करने से दूर है अगर कोई कर भी रहा है तो उसका इस्तेमाल गलत हो रहा है जैसे कोई किसी गरीब को दिया तो वो गरीब भी खा-पीकर अल्लाह की नाफ़रमानी कर रहा या किसी को कोई शादी में मदद किया तो वो सुन्नत के खिलाफ और फिजूलखर्ची में उड़ा दे रहा है जबकि अल्लाह फरमाता है : तर्जुमा - **नेकी और परहेज़गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़ियादती पर आपस में मदद न दो और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह का अज़ाब सख्त है** (सुरह माईदा, आयत न. 2)

इस्लाम की हक़ीक़त

इस्लाम एक सीधा रास्ता है जो शैतान से बचा कर अल्लाह तक ईमान के साथ पहुचाता है। अल्लाह तआला के नज़दीक मकबूल व पसन्दीदा दीन इस्लाम ही है। जब इब्लीस अल्लाह की नाफरमानी करके और आदम अलैहिस्सलाम को सजदा न करके शैतान बना तो कसम खा कर बोला मैं सींधे रास्ते मे बैठ जाऊंगा और तेरे बंदे को गुमराह कर दूंगा और तेरा शुक्रगुजार बन्दा नही रहने दूंगा । शैतान फिर बोला मैं इंसानो को पीस डालूंगा। अल्लाह अपने बंदों को शैतान से बचाने के लिए इस्लाम मजहब को सीधा रास्ता बना दिया इस रास्ते मे चलने के लिए कुरान, अम्बिया, औलिया को इस दुनिया मे जाहिर किया। जो हमे चल के दिखा गए। सीधा रास्ता का ज़िक्र कुरान में है। **हमको सीधा रास्ता चला, रास्ता उनका जिन पर तूने एहसान किया** (सूरह बकरा, आयत न. 6-7)

अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है: **तर्जुमा: बेशक अल्लाह के यहां इस्लाम ही दीन (सीधा रास्ता) है।** (सूरह इमरान, आयत न. 19)

तर्जुमा : **तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन पसन्द किया** । (सुरह: माएदा, आयात 3)

तर्जमा : **इस्लाम के सिवा कोई दीन चाहेगा वह हरगिज़ इससे कबूल न किया जाएगा और वह आखिरत में जियांकारों से** (सूरह इमरान, आयत न. 85)

इस्लाम को मानने वाले लोग मुसलमान कहलाते हैं। मुसलमान होने के लिए ईमान का होना शर्त है। ईमान दिल से अल्लाह व रसूल ﷺ को मानने और जिस्म से इस्लाम के मुताबिक जीने और जबान से कलमा पढ़ने का नाम ईमान है। इल्म से ईमान कामिल होता है और जिहालत से ईमान खत्म होता है।(गुनियातुतलबिन, बाब 6, 179)

इस्लाम को मानने वाले 3 तरह के कौम

इस्लाम को मानने वाले 3 तरह के गिरोह है 1. मोमिन/मोमिना 2. फ़ासिक 3. मुनाफ़िक़

1. मोमिन वो होता है जो इस्लाम के मुताबिक यानी अल्लाह व रसूलल्लाह के फरमान के मुताबिक ज़िन्दगी जीता है, अगर जाने अनजाने में गुनाह कर भी ले तो तौबा करके फिर गुनाह करना छोड़ देता है।

2. फ़ासिक़ वो होता है जो अल्लाह रसूल का नाफरमानी करके ज़िन्दगी जीता है जैसे बिना दाढ़ी का बिना सुन्नत का वगैरह, अल्लाह फ़ासिको को तौबा करके ईमान लाने का मौका दिया है जैसे सुन्नी अवाम ।

3. मुनाफ़िक़ वो होता है जो इस्लाम के मुताबिक जीता है लेकिन अल्लाह के महबूब बंदों की तौहीन करता है जिसके बुनियाद पर उसका अमाल अल्लाह बर्बाद कर देता और दिल मे मोहर लगा देता है यानी उसे तौबा नसीब नही जैसे वहाबी, देवबंदी, शिया, कदयानी वगैरह यानी तमाम गुमराह जमात।

इंसान की हक़ीक़त

इंसान जिस्म और रूह दोनों चीज़ों का मजमुआ है। ईमाम ग़ज़ाली अपनी किताब कीमियाए सआदत में लिखते है: अल्लाह पाक ने इंसानो को 2 चीजों से बनाया है एक ज़ाहिरी ढांचा है जिसे जिस्म कहा जाता है और जिसे ज़ाहिरी आंख से देखा जा सकता है जैसे सूरत, हाथ, पांव, आंख, नाक, कान, बाल, बाजू वगैरह। दूसरी बातिनी हक़ीक़त जिसे नफ्स, दिल, दिमाग और जान कहते है और इसे सिर्फ बातिन की आंख यानी रूहानियत से पहचान सकते है। दिल से मुराद वो गोस्त का लोथड़ा नही जो बाएं तरफ मौजूद है ये तो हर जानवर और मुर्दार में भी मौजूद होते है हक़ीक़त में दिल से मुराद वो कैफियत जैसे सीरत, अखलास, खौफ़, नियत वगैरह।

इंसान का ज़ाहिरी जिस्म का ताअल्लुक़ दुनिया से है यानी फानी है और बातिन का ताअल्लुक़ आख़िरत से है यानि बाक़ी रहने वाला है।

एक हदीस हज़रते अबू मूसा रदीअल्लाहु अन्हु कहते हैं कि पैग़म्बरे खुदा सल लल्लाहो अलैहे व सल्लम का इर्शाद पाक है कि- "**जिस शख्स ने अपनी (इस) दुनियाँ से प्यार किया तो उसने अपनी आखिरत को खसारे में डाला और जिसने अपनी आख़िरत से प्यार किया उसने अपनी दुनियाँ को नुक़सान पहुँचाया।**" (अहमद, बैहिक़ी)" इस हदीस पर ग़ौर फ़िक्र करे इस हदीस के मुताबिक जिसने अपनी ज़ाहिरी जिस्म(आंख, नाक, कान, सूरत, बाल) जिसका ताअल्लुक़ दुनिया से है यानी बदन से मोहब्बत किया तो अपने बातिन/रूह जिसका ताअल्लुक़ आख़िरत से है उसको नुकसान पहुँचाया। और ठीक इसका उल्टा जिसने अपनी बातिनी (दिल, दिमाग, सीरत, नियत) से मोहब्बत किया उसने अपना ज़ाहिरी बदन को नुकसान किया यानी दोनों मेसे कोई एक ही पायेगा।

अपने पढ़ा या सुना होगा अल्लाह वाले अपने ज़ाहिरी जिस्म को बिल्कुल ध्यान नही देते न ही फैसिलिटी वाली ज़िन्दगी अपनाते है, जंगलो में ज़िन्दगी गुज़ार देते है यानी अपने ज़ाहिर को नुकसान पहुंचाते हैं ताकि आख़िरत में फायदे में रहें। लेकिन आज हम अपने बातिन को भूल कर ज़ाहिर के पीछे पूरा वक़्त, दौलत, सेहत बर्बाद करने में लगे हैं और अपने बातिन को नुकसान पहुँचा रहे हैं

जो मरने के बाद पता चल जाएगा । अल्लाह कुरआन में फरमा दिया है : **तुम्हें ग़ाफ़िल रखा माल की ज़ियादा तलबी (लालच) ने, यहाँ तक कि तुमने क़ब्रों का मुंह देखा यानी मर गया, हाँ हाँ जल्द जान जाओगे, फिर हाँ हाँ जल्द जान जाओगे, हाँ हाँ अगर यक़ीन का जानना चाहते तो माल की महब्बत न रखते, बेशक ज़रूर जहन्नम को देखोगे।** (सुरह: तकासुर, आयात न. 1-6)

इंसान की 2 किस्में

अल्लाह फ़रमाता है : **वही है जिसने तुम्हें पैदा किया तो तुममें कोई काफ़िर और तुम में कोई मोमिन** । (सूरह तगाबुन, आयत न. 2)

1. मोमिन 2. गैर मोमिन

1 मोमिन वो होता है जो दीनदार होता है वो दुनिया को छोड़ कर आख़िरत में जाने की तैयारी करता रहता है , वो दुनिया की राहत को नही अपनाता, वो इस्लाम के खिलाफ कोई काम नही करता अगर जाने अनजाने में कर भी ले तो तौबा के ज़रिये अपने गुनाहों को मिटा देता है। मोमिन का अमल कुरआन के इस आयत के मुताबिक होता है : **"वह तौबह जिसका कुबूल करना अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल व करम से लाज़िम कर लिया है वह उन्हीं की है जो नादानी से गुनाह कर बैठें फिर थोड़ी देर में तौबा करलें ऐसो पर अल्लाह अपनी रहमत है"** (सूरह निसा, आयत न. 17) मोमिन वो होता है जो खुद को दु:ख पहुँचा कर खुदा को राज़ी करना चाहता है, यानि आज़माइश में कामयाबी के लिए मुसीबतों, परेशानियों में सब्र, भरोसा और शुक्र करता है। जैसा कि कुरान में अल्लाह फ़रमाता है : **क्या लोग इस घमण्ड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिए जाएंगे कि कहें हम ईमान लाए और उनकी आज़माइश न होगी।** (सूर: अंकबूत, आयत न1)

2. गैर मोमिन : इसमे इंसानो के बहुत सारे गिरोह शामिल है जैसे काफ़िर यहूदी और मुश्रिक (अल्लाह को छोड़कर मूर्ति पूजा करने वाले जैसे , ईसाई, मजूसी, हिन्दू, बौद्ध, जैन वगैरह) इनका ज़िक्र अल्लाह कुरान में यूं फ़रमाता है :**"काफ़िर अपने रब के मुक़ाबिल शैतान को मदद देता है"** (सूरह फ़ुरक़ान, आयत न. 55)

इसके अलावा दूसरे गिरोह वो है जिसे मुनाफ़िक़ और फ़ासिक़ कहा जाता है जो इस्लाम को मानते है लेकिन इस्लाम के खिलाफ काम करने की वजह से मोमिन नहीं कहलाते है। मुनाफ़िक़ अल्लाह को मानते है लेकिन अल्लाह वालों की तौहीन करते है। अल्लाह ने इनके दिलों मे मोहर लगा दी है यानि इनको तौबा भी नसीब नही होगी जैसे - शिया, वहाबी, देवबंदी, कादयानी वगैरह यानी अहले सुन्नत व जमात के अलावा जितने है सब मुनाफिकीन है। अल्लाह ने कुरान में इनका जिक्र यूँ फ़रमाया : **बेशक मुनाफ़िक़ दोज़ख़ के सबसे नीचे तब्के में हैं**। (सूरह निसा, आयत न. 145) फ़ासिक़ वो गिरोह है जिसका ताअल्लुक़ हक़ जमात से है यानी सुन्नी है लेकिन जहालत और लालच के वजह से उनकी बदआमाली इतनी ज्यादा है कि अल्लाह उनसे नाराज़ है और उन्हें आख़िरी सांस तक तौबा का मौका दे दिया है: अल्लाह कुरआन में फ़ासिको का जिक्र यूँ फ़रमाता है: **क्या ही बुरा नाम है मुसलमान होकर फ़ासिक़ कहलाना और जो तौबह न करें तो वही ज़ालिम हैं**। (सूरह हुजरात, आयत न. 11)

मुसीबत/परेशानी की हक़ीक़त

पहले ये जान लें कि ये दुनिया मोमिन के लिए आराइश (राहत) की जगह नही बल्कि आज़माइश की जगह है। ये दुनिया जंगल की तरह है और इस दुनिया मे शैतान शेर की तरह है और इंसान भेड़िये की तरह है। जैसा कि कुरान पाक में है अल्लाह फरमाता है **"ऐ इंसान खबरदार तुम्हें शैतान फ़ितने (मुसीबत) में न डाले जैसा तुम्हारे मां बाप को बहिश्त (जन्नत) से निकाला"**। (सूरह आराफ, आयात न. 27)

फिर फ़रमाता है : **उनसे (शैतान से) बचता रह कि कहीं तुझे लग़ज़िश (धोखा) न दे दें** (सुरह माएदा, आयत न. 49)

शैतान बोला " **मैं इंसानो को पीस डालूंगा मगर थोड़ा" ।(यानी सिर्फ परहेजगारों के अलावा सबका ईमान छीन कर अज़ाब का हकदार बना देगा**) (सूरह बनी इस्राईल, आयत न. 62)

इंसानो के बारे में अल्लाह फरमाता है : आदमी कमज़ोर बनाया गया। (सूरह निसा, आयत न. 28)

शैतान की दरख्वास्त

अल्लाह का नाम आदिल भी है यानी बदला देने वाला। शैतान ने जो हज़ारो साल अल्लाह की इबादत की उसके बदले में खुदा से दरख्वास्त की कि इलाही तूने मुझे मरदूद तो कर ही डाला है अब इतना कर कि मुझे आदम की औलाद पर पूरी ताकत और क़ाबू दे दे, ताकि उन्हें मैं गुमराह कर सकूँ खुदा ने फ़रमाया जा तू उन पर काबू याफ़ता है और मैंने तुझे उन पर कुदरत दे दी कहने लगा, इलाही! कुछ और ज़्यादा कर, फ़रमाया तू उन के मालों में शिरकत कर ले, यानी तू उन के माल फिजूलखर्ची में खर्च करवा सकेगा, कहने लगा कुछ और ज़्यादा कर, अल्लाह ने फरमायां जा! उनके सीने (दिल) तेरे रहने के घर होंगे यानी पूरा कब्जा! (शैतान की हिकायात पेज न. 26)

ये ताकत मिलने के बाद शैतान ने क़सम खाकर कहा कि मैं सीधे रास्ते पर बैठ जाउँगा तेरे बंदों (आदम की औलाद) को चारों तरफ से घेर लूँगा, इस तरह उन पर सामने से भी हमला कर दूँगा, पीछे से भी, और उन के दाहिने और उन के बाएं से भी उन पर हमला आवर होऊंगा, और उन्हें तेरे शुक्र गुज़ार बन्दे न रहने दूँगा। खुदा तआला ने फरमाया, मलऊन तू यहाँ से निकल जा! और जा लोगों को बहका, मेरा भी यह एलान है जो तेरे कहे पर चला में उसे भी तेरे साथ जहन्नम में दाखिल करूँगा। (कुरआन पा: 8, रू. 6)

ग़ौर व फ़िक्र : शैतान जो चारो तरफ से हमलावार की बात कही उसमें एक तरफ दौलत है जिसका लालच देकर मुसलमानों को दीन से दूर कर दिया है, दूसरी औरत है जिसके जरिये शैतान मर्दो को गुनाह कराने में कामयाब रहा है खासकर बदकारी, तीसरी शोहरत यानी खुद को बेहतर समझना या दिखावा है जिसे अपनावा कर मुसलमानों को सुन्नत से दूर कर दिया है आज आप देख रहे है, चौथी ख्वाहीसात यानी लंबी उम्मीदे है जिसके वजह से मुसलमान मौत, आखिरत और अल्लाह को भूल बैठा है।

इंसानों के दिल में शैतान का घर

हदीस : इमाम सुयूती इब्ने अबिददुनिया हज़रत यहया बिन अबी काशिर से

रिवायत करते है वो फरमाते है के इंसान के सीने (दिल) में वसवसे का एक दरवाजा है जिस से (शैतान) वसवसा डालता है। (जिन्नो की दुनिया, हदीस 270)

हदीस : सईद बिन मंसूर और अबू बकर बिन अबी दाऊद "ज़िम्मूल वसवसा" में हज़रत अ़रवह बिन रुवैम से रिवायत करते हैं के हज़रत ईसा बिन मरयम अलैहिस्लाम ने अपने परवरदिगार की बारगाह में अर्ज कि के उन (हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम) को इन्सानों में शैतान के रहने की जगह दिखाए चुनांचे अल्लाह ताअ़ला ने उन पर ज़ाहिर फरमा दिया तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने देखा कि शैतान का सर सांप की सिर की तरह है जिसने अपना सिर दिल के दहाने पर रखा हुआ है जब इंसान अल्लाह ताअ़ला का ज़िक्र करता है तो ये अपना सिर हटा लेता है और जब बंदा अल्लाह का ज़िक्र छोड़ देता है तो शैतान उसे आज़माता है और वसवसे डालने लगता है यानि उसकी तरफ वापिस आ कर वसवसे डालता है। (जिन्नो की दुनिया, इमाम जलालुद्दीन सुयुति)

दिल जिस्म का बादशाह

हदीस : इन्सान के अन्दर गोश्त का एक लोथड़ा है, अगर वह दुरुस्त हो तो सारा जिस्म दुरुस्त होता है और अगर वोह खराब हो तो सारा जिस्म खराब होता है, सुन लो कि वोह दिल है । (बुखारी शरीफ़, जिल्द 1)

शैतान जिस्म का प्रधानमंत्री

मिसाल : जिस्म एक मुल्क और दिल राजधानी की मानिंद है, जिस तरह मोदी मुल्क का प्रधानमंत्री है तो उसके मुताबिक ही पूरा देश चलता है, अगर प्रधानमंत्री सही हो तो मुल्क में अमन - चैन होता है, लेकिन बादशाह ही सही न हो तो पूरा देश बेचैन, बेरोजगार और बर्बाद हो जाता है । इंसान के जिस्मानी और रूहानी परेशानियो का राज़ भी इसी तरह है जिसके दिल मे शैतान कब्जा कर ले तो उसके अंग अंग में बीमारी, परेशानी और मुसीबत छा जाती है जैसे ग़ाफ़िल इंसान । कुरआन में अल्लाह फ़रमाता है : **जिसे रतौंद (पलक झपकने भर की गफ़लत) आए रहमान के ज़िक्र से हम उस पर एक शैतान तैनात करें कि**

वह उसका साथी रहे. (सूरह जुखरूफ़, आयत न. 36) शैतान को दिल से दूर करने के 2 तरीके है 1.हमेशा अल्लाह का ज़िक्र, 2.दिल से तौबा।

ग़ौर करे रतौंद आंख की बीमारी को कहा जाता है जिससे साफ-साफ नही दिखता। रतौंद की मिसाल दी गयी है यानि जो कुछ पल भी अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हो जाये उसपर एक शैतान तैनात कर दिया जाता है तो जो हमेशा जहालत और दुनियादारी की वजह से अल्लाह को भूल गया हो उस पर कितने शैतान तैनात होंगे अपना जायजा ले लें और महसूस करें कि जिसके साथ शैतान यानी दुश्मन हो वो क्यों परेशान न रहे।

कुरआन में अल्लाह फरमाता है: **"बेशक शैतान तुम्हारा दुश्मन है तो तुम भी उसे दुश्मन समझो"** (सूरह फतिर, आयत न. 6)

परेशानी/मुसीबत की 2 किस्मे

1. सजा : ये मुसीबत गैर मोमिन के लिए है जिसे अल्लाह का अज़ाब कहा जाता है, जो नाफरमानी की वजह से है। इस किस्म में काफिर, मुश्रिक मुनाफ़िक़, फ़ासिक अपना दुनियावी यानी जिस्मानी ख्वाहिशात, दौलत, शोहरत, औरत को अपनाता है जिससे बचने का हुक्म अल्लाह दिया है। इस्लामी तरीका को छोड़ कर शैतानी तरीका अपना लेता है हराम हलाल कुछ नही देखता यानी गुनाह करता है अल्लाह और उसके रसूलﷺ की नाफरमानी करता है, सुन्नत छोड़ता है और अल्लाह की रहमत से दूर हो जाता है हर भलाई से दूर हो जाता है और शैतान (दुश्मन) के करीब चला जाता है। फिर शैतान उस इंसान के साथ जैसा चाहता है वैसा करता है यानी परेशानी में मुबतला करता है। इस किस्म में शैतान जिस्मानी राहत और ख्वाहिशात का लालच दिलाकर उसके दिल मे दाख़िल हो जाता है फिर दिल और जिम्स दोनों को बेचैन, दर्द, और तरह तरह की बीमारियों में मुबलता कर देता है। इसकी मिसाल दुनियादार अमीरों की ज़िन्दगी है। इसलिए सब्र के जरिये शैतान को करीब न आने दो

2. आजमाइश : ये मुसीबत ईमान वालो के लिए है जिसे इम्तेहान कहा जाता है। याद रखें इम्तेहान सिर्फ मोमिनों के लिए है। इस किस्म में मोमिन बन्दा अपना ईमान बचाने के लिए और दिल से शैतान को दूर रखने के लिए जिस्मानी लज़्ज़त

वाले सामान न खाता है ना ही अपनाता है जैसे राहत के सामान, लज़ीज़ खाना, शोहरत का लिबास, दौलत, फैसिलिटी वाला मकान, नरम बिस्तर, नफ्सानी ख़्वाहिशात वगैरह। क्योंकि ये सब शैतान को अपनी तरफ बुलाने का रास्ते हैं।बुजुर्गाने दीन की सीरत आप पढ़ लें वो दुनियावी सामान को नही अपनाते थे और जंगलो में ज़िंदगी गुज़ारते थे। सब्र के ज़रिये अल्लाह के दोस्त बन जाते हैं, इस किस्म में अल्लाह आज़माइश के जरिये फ़ानी जिस्म को तकलीफ देकर दिल मे सुकून और रूह में राहत डाल देता है। इसकी मिसाल फ़क़ीरी(सूफियाना) ज़िन्दगी है।

5 तरह के लोगो के साथ अल्लाह ग़ज़बनाक होता है

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मरवी है, आप ने फरमाया पांच आदमी ऐसे हैं जिन पर अल्लाह तआला ग़ज़बनाक होता है। अगर वह चाहेगा तो दुनिया में उन्हें अपने गजब का निशाना बनाएगा वरना (आखिरत में) उन्हें जहन्नम में डालेगा।

1. हाकिमे कौम जो खुद तो लोगों से अपने हुकूक ले लेता है। मगर उन्हें उनके हुकूक नहीं देता और उनसे जुल्म को दूर नहीं करता।

2. कौम का काइद (सदर, सेक्रेटरी) लोग जिसकी पैरवी करते हैं और वह ताकतवर और कमजोर के दरमियान फैसला नहीं कर सकता और नफ्सानी ख्वाहिशों के मुताबिक गुफ्तगू करता है।

3. घर का सरबराह (**वालदैन**) जो अपने घर वालों और औलाद को अल्लाह की इताअत का हुक्म नही देता और उन्हें दीनी कामों की तालीम नहीं देता।

4. ऐसा आदमी जो उजरत पर मजदूर लाता है और काम मुकम्मल करवा के उसकी मजदूरी पूरी नहीं देता, और

5. वह आदमी जो अपनी बीवी का हक्के महर दबा कर उस पर ज्यादती करता है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 54, पेज 354)

हराम खाना परेशानी की वजह

हज़रत मनसूर बिन अब्दुल्लाह का इरशाद है कि मैंने अबू अली रूदबारी को फरमाते सुना कि परेशानी तीन वजूह से आती है, तबियत की ख़राबी से मैंने दरयाफ्त किया तबियत की खराबी क्या है? फरमाया हराम खाना, मैंने अर्ज किया कि आदत के जड़ पकड़ लेने से क्या मुराद है फरमाया बुरी नज़र, हराम से फायदा उठाना और दूसरों को पीठ पीछे बुरा कहना, फिर मैंने अर्ज किया कि सोहबत कि खराबी क्या है? फरमाया जब नफ्स में कोई ख्वाहिश पैदा हो तो उसकी पैरवी करना। (गुनियतुत्तालिबीन, पेज 695)

हराम और हलाल में मिलावट के वजह

हज़रते अबू हुरैरा से रिवायत है कि हुजूर नबिय्ये करीम ने फ़रमाया कि लोगों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि आदमी येह परवाह नहीं करेगा कि इस ने जो माल हासिल किया है वोह हराम है या हलाल। (बुखारी शरीफ जिल्द 2)

वहाबी या गैर मुकल्लिद से मेल जोल से परेशानी

वहाबी या गैर मुकल्लिद से मेल जोल मुतलकन हराम है और उसके साथ शादी व्याह खालिस ज़िना। हदीस में है बदमज़हब के साथ न खाना खाओ, न उनके साथ पानी पियो, न उनके साथ बैठो, न उनके साथ नमाज़ पढ़ो न उनके जनाज़ा की नमाज पढ़ो (इब्ने हिबान) (फतावा रज्वीया, जिल्द 9 533)

अंग्रेजी दवा नापाक : आला हजरत

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी कुद्देसा सिरहू अंग्रेज़ी रक़ीक दवाओं के मुतअल्लिक फ़रमाते हैं: अंग्रेज़ी दवाओं में जितनी दवायें रक़ीक़ होती हैं। जिन्हें टिकचर कहते हैं उन सब में यकीनन शराब होती है, वह सब हराम भी हैं और नापाक भी, न उनका खाना हलाल, न बदन पर लगाना जाइज़, क्योंकि स्प्रिट ही रूह शराब होती है, बल्कि वह तमाम शराबों में अख़बस है और वह हराम व गन्दी और पेशाब की तरह नजासते गलीज़ा है। (फैजाने आला हज़रत, पेज)

परेशानी 6 गुनाहों के वजह से

हज़रत अनस (रदिअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फरमाया कि जब मेरी उम्मत छः चीजों को हलाल समझने लगेगी तब उन पर तबाही नाज़िल होगी जब उनमें बाहमी लाअनत व मलामत आम हो जायेगी और लोग कसरत से शराब पियेंगे, मर्द रेशमी लिबास पहनेंगे, लोग गाने बजाने और रश्क (नाचने) वाली औरतें रखने लगेंगे और मर्द मर्दों से और औरतें औरतों से जिन्सी लज्ज़त हासिल करेंगी। (बैहकी-शुअबुल ईमान-4/377-हदीस-5469)

परेशानी 15 गुनाहों के वजह से

हज़रत मौला अली (रदिअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फरमाया कि जब मेरी उम्मत में पन्द्रह (15) काम होने लगें तो उन पर बलायें उतरेंगी पस सहाबा-किराम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह वो पन्द्रह काम कौन से है तो आप (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फरमाया कि (1) जब महसूलात दौलत हो जाये और (2) अमानत गनीमत हो जाये (यानी अमानत में खयानत की जाये) (3) ज़कात को कर्ज समझा जाये (4) आदमी अपनी बीवी की ख़्वाहिशात पर चलना शुरु कर दे और अपनी माँ की नाफरमानी करने लगे (5) मस्जिदों में आवाज़े ऊँची होना शुरु हो जायें (6) आदमी अपने दोस्त से अच्छा सुलूक करे और अपने बाप से बुरा सुलूक करे (7) आदमी की इज्ज़त महज़ उसके शर से महफूज़ रहने के लिये की जाये (8) कौम का बदतरीन आदमी कौम का हुक्मरान बन जाये (9) मोहल्ले का बदकार शख़्स उनका सरदार (सदर व सेक्रेटरी) बन जाये (10) गाने वाली औरतें आम हो जायें (11) गाने बजाने का सामान आम हो जाये (12) शराबें पी जायें (13) रेशम पहना जाये (14) बाद वाले लोग पहले के लोगों को लाअन तान से याद करें (15) गैर दीनी कामों के लिये इल्म हासिल किया जाये तो उस वक्त सुर्ख आँधी, ज़लज़ले, ज़मीन में धंस जाने, शक्लें बिगड़ जाने, और आसमान से पत्थर बरसने और तरह तरह के मुसलसल अज़ाबों का इन्तिज़ार करो ये निशानियाँ एक के बाद एक ज़ाहिर होगी जिस तरह किसी हार का धागा

टूट जाने से गिरते मोतियों का ताँता बंध जाता है। (तिर्मिज़ी-सुनन-2/101-2211)

बेनमाजिओं को 15 अज़ाब

हारिस ने हज़रत अली बिन अबी तालिब का कौल नक्ल किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लो अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो शख्स नमाज को हकीर समझेगा अल्लाह तआला उस को पन्द्रह सजायें देगा छ: किस्म का अजाब मरने से पहले 3 मरते वक्त 3 कब्र में, 3 कब्र से निकलते वक्त

6 दुनियावी अजाब

(1) गाफिल नमाजी को नेकों की फेहरिस्त से खारिज कर दिया

(2) उससे जिन्दगी की बरकत दूर कर दी जाएगी। य्यानी बीमारी ।

(3) उसके रिज्क से बरकत दूर हो जाएगी। यानी रिज़्क में तंगी।

(4) उसका कोई नेक अमल कबूल नहीं किया जाता ।

(5) उस की दुआ कबूल नहीं होती ।

(6) वह नेकों की दुआओं से महरूम कर दिया जाता।

मरते वक्त का अज़ाब।

(1) वह प्यासा मरेगा अगरचे उसके मुंह में सात दरिया उलट दिये जा

(2) उनकी मौत अचानक होगी (तौबा की मोहलत ही नहीं मिलेगी)

3 बोझ उसके कांधों पर दुनियावी लोहे, लकड़ी और पत्थरों का डाला जाएगा जिस से

वह बोझल हो जाएगा।

कब्र के तीन अजाब यह है कि

(1) कब्र उस पर तंग कर दी जाएगी

(2) कब में जबरदस्त अंधेरा होगा

(3) मुनकर नकीर के सवालों का जवाब नहीं दे सकेगा।

कब्र से निकलने पर यह तीन अजाब होंगे

(1) अल्लाह तआला उस पर गजबनाक होगा

(2) उससे हिसाब बहुत ज्यादा सख्त होगा
(3) अल्लाह तआला के दरबार से उसकी वापसी दोजख की तरफ होगी (अगर अल्लाह माफ फरमा दे तो खैर) (गुनियतुत्तालिबीन, बाब 19, 570)

ज़िना (नाजाइज़ सेक्स) से 6 परेशानियां

बाज़ सहाबए किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से मरवी है, जिना से बचो उस में छः मुसीबतें हैं जिन में से तीन का तअल्लुक दुनिया से है और तीन का आख़िरत से।

दुनिया में 1. रिज्क कम हो जाता है (यानी बेरोजगारी) 2. जिन्दगी थोड़ी हो जाती है (यानि बीमारी) 3. चेहरा बिगड़ जाता है। (यानी बदसूरत) आख़रित में 1. खुदा की नाराजगी, 2. सख्त पूछ ताछ और 3. जहन्नम में दाखिल होना है।(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 22, पेज 148)

ज़िना (सेक्स) और सूद के वजह से तबाही

हदीस : हाकिम ने सहीह सनद के साथ हजरते इब्ने अब्बास रदिअल्लाहु अन्हु से रिवायत की है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब किसी शहर में जिना और सूद आम हो जाये तो उन्होंने गोया खुद ही अल्लाह के अज़ाब को दावत दे दी है। **(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 69, पेज 413)**

रुपया जमा करने वाले पर 4 मुसीबतों का आना

हजरते अली रजियल्लाहु अन्हु से मरवी है हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब लोग फकीरों से दुश्मनी रखें, दुनियावी शौकत व हशमत का इजहार करें और रुपया जमा करने पर लालची हो जायें तो अल्लाह तआला उन पर चार मुसीबतें नाजिल फरमाता है,1 कहत साली, 2 जालिम बादशाह **(मोदी जैसा)** , 3 खाइन (टैक्स लेने) वाला हाकिम और , दुश्मनों की हैबत **(जैसे बजरंग दल, शिव सेना , RSS)**। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 34, पेज 229)

माल जमा करने वाले नुकसान में

हदीस : हज़रत अबूज़र रदिअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि मैं सरकारे दो आलम सललल्लाहो अलैहे व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप सललल्लाहो अलैहे व सल्लम क़ाबा शरीफ़ के साये में तशरीफ़ फ़रमा थे। मुझे देख कर आपने फ़रमाया - "क़सम है परवरदिगारे क़ाबा की वह (शख्स) बड़े घाटे में है।" मैंने अर्ज़ किया - "या रसूलल्लाह मेरे माँ-बाप आप पर फ़िदा हों वह कौन लोग है...?" तब आपने फ़रमाया- "माल को ज़्यादा जमा करने वाले लोग, मगर (वह लोग नहीं) जिन्होंने अपने आगे-पीछे और दाये-बाये (अच्छे कामों में) ख़र्च किया और ऐसे लोग कम हैं।"*(बुखारी, मुस्लिम)*

दुरुद न पढ़ना परेशानी की वजह

हज़रत जाबिर रदिअल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जब कोई कौम जमा हो और इस हालत में उठ कर चली जाये कि उन्होंने न अल्लाह का जिक्र किया और न नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर दुरूद पढ़ा तो वह यूँ उठे जैसे वह बदबूदार मुरदार खा कर उठे। (सुन्नी फजाईले आमाल, हिस्सा 8, पेज 608)

नेकी का हुक्म न देना और गुनाहो से न रोकना परेशानी की वजह

हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया वह शख़्स हम में से नहीं जो हमारे छोटों पर रहम न करे और भलाई का हुक्म न दे और गुनाहों से मना न करे। (तिर्मिज़ी)

परेशानी की वजह दुनिया हासिल करना

फरमाने नबवी है जिस की सब से बड़ी तमन्ना दुनिया (यानी दौलत, शोहरत, औरत) हासिल करना है, अल्लाह तआला के यहां उसका कोई हिस्सा नहीं है, अल्लाह तआला ऐसे के दिल पर चार चीज़ों को मुसल्लत कर देता है। दाइमी

(हमेशा) गम, दाइमी मशगूलियत, दाइमी रिज़्क में न बरकती और कभी न पूरी होने वाली आरजूएं।(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 31, पेज 189)

वजह : आज लोग बहुत मजे से दूसरों के घरो या शादी पार्टी में दावत खा लेते है।और ये नही सोचते कि ये हराम माल का था या हलाल,गोस्त ज़िब्ह करने वाला मोमिन था या मुनाफ़िक़ या फ़ासिक़ जबकि सिर्फ मोमिन का ज़िब्ह हलाल है।

कौल : हज़रते नोमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मेम्बर पर खड़े होकर फ़रमाया शैतान के कुछ जाल हैं, उन जालों में से यह जाल भी हैं। अल्लाह की निअमतों पर इतराना, उस की अताओं पर फ़ख़्र करना, अल्लाह के बंदों से तकब्बुर करना और अल्लाह तआला की नापसन्दीदा ख़्वाहिशात की पैरवी करना, ऐ अल्लाह! अपनी मिन्नत और एहसान के तुफैल दुनिया और आख़रित में हमें अफ्व और आफियत अता फरमा! (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 42)

परेशानी की वजह : इस कौल के मुताबिक आज हर इंसान शैतान के जाल में है इसलिए परेशान है।

ढोंगी बाबाओं पर भरोसा

हदीसे कुदसी में है अल्लाह तआला फ़रमाता है जो बन्दा मुसीबतों के वक़्त मेरी मखलूक (पैदा की हुई चीज़) से मदद मांगता है (जैसे इस दौर का झाड़फूंक और काफिर डॉक्टर से) तो मैं उस पर आसमानों के दरवाजे बन्द कर देता हूं। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 3)

वजह : आज ये परेशानी की खास वजह है। लोगों को अल्लाह पर भरोसा नही अगर भरोसा होता तो सब्र करके अल्लाह से ही मदद मांगते।

दुनिया को पूजने वाले लोग

हदीस 5 : फरमाने नबवी है कि जल्द ही तुम्हारे बाद एक कौम आने वाली है जो दुनिया की खुशरंग निअमतें खायेंगे, खुश कदम घोड़ों (बाइक और कार)पर

सवार होंगे। बेहतरीन, हसीन व खूबसूरत औरतों से निकाह करेंगे, बेहतरीन रंगों वाले कपड़े पहनेंगे, उन के मामूली पेट कभी नहीं भरेंगे, उन के दिल ज्यादा दौलत पर भी कनाअत (सब्र) नहीं करेंगे। सुबह व शाम दुनिया को माअबूद समझ कर उस की इबादत करेंगे, उसे अपना रब समझेंगे, उसी के कामों में मगन और उसी की पैरवी में गामजन रहेंगे। जो शख्स उन लोगों के जमाना को पाये, उसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की वसीयत है कि वह उन्हें सलाम न करे, बीमारी में उन की अयादत (देखा) न करे, उन के जनाजों में शामिल न हो और उन के सरदारों (इमाम, सदर , सेक्रेटरी) की इज्जत न करे, और जिस शख्स ने ऐसा किया उस ने इस्लाम को मिटाने में उन की मदद की। (मुकाशफुतुल कुलूब, बाब न. 38, पेज 249)

सिर्फ ख्वाहिशात से मोहब्बत करने वाली कौम

हदीस 6 : हज़रते हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबए किराम में तशरीफ़ लाये और फ़रमाया कौन है जो अल्लाह तआला से अंधेपन का नहीं बल्कि बसारत (रौशनी) का सवाल करता है? बा-ख़बर हो जाओ, जो दुनिया की तरफ माइल हो गया और उस से बे-इन्तेहा उम्मीदें रखने लगा उसका दिल अन्धा हो गया और जिसने दुनिया से अलाहिदगी करली और उस से कोई ख़ास उम्मीदें न रखीं, अल्लाह तआला उसे नूरे बसीरत अता फरमा दिया, वह तालीम के बगैर इल्म और तलाश के बग़ैर हिदायतयाब (हिदायत हासिल कर लिया) हो गया। आख़िरी जमाने मे तुम्हारे बाद एक क़ौम आएगी जिनकी हुकूमत की बुनियाद क़त्ल और जुल्मो सितम पर होगी, जिनकी अमीरी व मालदारी बुख़्ल (कंजूसी) व तकब्बुर (शोहरत) से भरपूर होगी और नफ़्सानी ख़्वाहिशात के सिवा उन्हें किसी चीज़ से मुहब्बत नहीं होगी। ख़बरदार तुम में से कोई अगर वह वक़्त पाये और मालदारी की ताक़त रखते हुए गरीबी पर राज़ी हो जाये, मुहब्बत पा सकने के बावजूद उन से अदावत पर राज़ी है और अल्लाह की रज़ा में इज्ज़त हासिल कर सकने के बावजूद तवाज़ोअ (लोगो का ताना सुनकर) से ज़िन्दगी बसर करे तो अल्लाह तआला उसे पचास सिद्दीकों (वलियों) का दर्जा देगा। (मुकाशफुतुल कुलूब, बाब न. 31, पेज 192)

जन्नत की खुश्बू भी नहीं सूंघ सकने वाले लोग

हदीस 7 : हज़रत सलमान फ़ारसी हुजूर पाक को फ़रमाते हुए सुना कि "जो नर्म व मुलायम बिस्तर पर सोए और लिबासे शोहरत पहने और आलीशान सुवारी पर सवार हो और मन पसन्द खाने खाए वोह जन्नत की खुश्बू भी नहीं सूंघ सकेगा।"

दाढ़ी मुंडाने वाला बेनसीब

आखिर ज़माना में कुछ लोग होंगे कि दाढ़ियां कतरेंगे वह निरे बेनसीब हैं यानी उनके लिए दीन में हिस्सा नहीं, आख़िरत में भी हिस्सा नही। (दकाइकुत्तरीका, फतावा रज्वीया जिल्द 9) (बाहवाला फैजाने आला हज़रत, पेज 231)

ये उम्मत सूअर और बन्दर बन जायेंगे

हदीस : अब्दुल्लाह बिन अहमद ने जवाइदुल मुस्नद में यह हदीस नक्ल की है कि कसम है उस जात की जिस के दस्ते कुदरत में मेरी जान है, अलबत्ता मेरी उम्मत के लोग बुराईयों में रात गुजारेंगे, ऐश व इशरत करेंगे और लहव व लइब में मशगूल होंगे, जब सुबह होगी तो अल्लाह की हराम की हुई चीज़ों को हलाल करने, औरतों से गाना बजाना सुनने, शराब पीने, सूद खाने और रेशम पहनने के सबब सूअर और बन्दर बन जायेंगे। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 69 ,पेज 415)

नाफरमानी और गुनाह

गुनाह क्या है : अल्लाह और रसूल सलल्ललाहु अलैहिवस्सलम के फरमान के खिलाफ काम करने का नाम गुनाह है यानी जिस काम के करने का हुक्म अल्लाह व रसूल ने दिया है उसको न करना और जिससे मना किया है उसको करना गुनाह है गुनाह (हराम) को हलाल जानना कुफ्र है। गुनाहों की वजह से दिल में सख्ती और स्याही पैदा होती है और ईमान ज़ईफ (कमज़ोर) और खत्म भी हो जाता है। तौबा के जरिये ईमान को मजबूत या वापस ईमान लाया जा सकता है।

गुनाह का प्रैक्टिकल माना यह है कि दुनियावी सामान के जरिये जिस्म को आराम मिलना या दिल को कुछ पल के लिए मजा मिलना इसी का नाम गुनाह है

गुनाह तीन क़िस्म के हैं :

पहली किस्म यह कि तुम ने खुदा के फ़र्ज कर्दा अहकाम को अदा न किया हो और इन की अदाएगी तुम्हारे जिम्मे हो जैसे नमाज़, रोज़ा, ज़कात और कफ्फारा वगैरा तो येह सिर्फ ज़बानी तौबा से मुआफ़ नही होंगे बल्कि जहां तक हो सके इन की क़ज़ा लाज़िम है या कफ़्फ़ारा अदा करना होगा।

दूसरी क़िस्म वोह गुनाह जिन की अब कजा तो नही हो सकती मगर हों वोह भी तुम्हारे और खुदा के दरमियान ही जैसे कही शराब नोशी की हो या राग रंग(गाना बजाना) की महफिल सजाई हो या सूद खाया हो तो इस किस्म के गुनाहों की मुआफी की सूरत यह है कि गुज़श्ता गुनाहों पर नदामत व पशेमानी की जाए और आइन्दा के लिये उन्हें तर्क कर देने का पक्का इरादा कर लिया जाए।

तीसरी क़िस्म वोह गुनाह हैं जो तुम्हारे और मख्लूक के दरमियान हैं। तमाम गुनाहों से जियादा संगीन गुनाह येह तीसरी क़िस्म के गुनाह हैं इन की नोइय्यत मुख्तलिफ़ होती है बा'ज़ किसी के माल से तअल्लुक रखते हैं और बा'ज़ किसी की जात से, इसी तरह बा'ज़ वोह होते हैं जिन का तअल्लुक किसी की इज्जत व हुरमत से होता है और बा'ज़ वोह होते हैं जो किसी को दीनी तौर पर नुक्सान पहुंचाया होता है।

तो जिन का तअल्लुक माल से है उन के मुतअल्लिक ज़रूरी है कि अगर हो सके तो वोह माल वापस कर दिया जाए अगर गुरबत व इफ्लास के बाइस वापस करने से मा'जूर है तो साहिबे माल से जाइज़ व हलाल करवा ले अगर साहिबे माल मर चुका है या वहां मौजूद नही तो माल की मिक़दार के मुताबिक कोई चीज़ सदका कर दे और अगर येह भी मुमकिन न हो तो आ'माले सालिहा की कसरत करे और अल्लाह तआला के दरबार में गिर्या व जारी करे ताकि रोज़े क़ियामत खुदा तआला उस साहिबे माल को राजी कर दे और वोह गुनाह जिन का तअल्लुक़ किसी की जान या जात से हो जैसे किसी को क़त्ल किया हो तो उस के इवज़

(बदले में) किसास देना लाज़िम है या मक्तूल के वारिसों से मुआफ़ कराना ज़रूरी है और अगर वारिस मौजूद नही तो दरबारे इलाही में गिर्या व जारी ज़रूरी है और खुदा से इस की मुआफ़ी चाहना लाजिम है ताकि अल्लाह उस मक्तूल को तुम से राज़ी कर दे और किसी की इज्ज़त व आबरू से मुतअल्लिक येह गुनाह है कि इस लिये कि खुदा के फज्लो करम से येह उम्मीद है कि वोह तुम्हारी सादिक गिर्या व ज़ारी देख कर तुम्हारे ख़स्म) को अपने खजानों से अता कर के तुम्हारी तरफ से राज़ी कर दे*(मिन्हाजुल आबेदीन, बाब 3)*

गुनाहगार (फ़ासिक) की किस्में

फासिक (गुनाहगार) की दो क़िस्में हैं (1) फ़ासिक काफिर (2) फ़ासिक फ़ाजिर

फासिक काफिर वह है जो अल्लाह तआला और उस के रसूल पर ईमान नही रखता। हिदायत को छोड़ कर गुमराही का तालिब होता है जैसा कि फ़रमाने इलाही है (तो फिस्क किया उस ने अपने रब के हुक्म के बारे में।)

फ़ासिक फ़ाजिर वह है जो शराब पीता है, माले हराम खाता है, बदकारियां करता है, इबादत को छोड़ कर गुनाहों में ज़िन्दगी बसर करता है। मगर अल्लाह तआला को वाहिद (एक) मानता है और उस के साथ शरीक नही ठहराता। इन दोनों में फर्क यह है कि फासिक काफिर की बख्शिश मौत से पहले-पहले कल्मए शहादत और तौबा के बगैर नामुमकिन है और फ़ासिक फाजिर की मग़फ़िरत मौत से पहले तौबा और पशेमानी (पछतावे) के जरीए मुमकिन है. इस लिए कि हर वह गुनाह जिस का तअल्लुक नफ्सानी ख़्वाहिशों से है उस की मग़फित मुमकिन है, और हर वह गुनाह जिस की बुनियाद तकब्बुर और खुद बीनी है उस की मगफिरत नामुमकिन है, शैतान की नाफरमानी की वजह भी यही तकब्बुर और खुदपसन्दी थी। (मुकाशफतुल कुलूब , बाब 8, पेज 68)

शैतान की नाफरमानी शोहरत के वजह से

कुरआन : बेशक हमने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हारे नक़्शे बनाए फिर हमने मलाइका से फ़रमाया कि आदम को सज्दा करो तो वो सब सज्दे में गिरे मगर इब्लीस, यह सज्दे वालों में न हुआ अल्लाह फ़रमाया किस चीज़ ने तुझे रोका कि

तूने सज्दा न किया जब मैंने हुक्म दिया था बोला मैं उससे बेहतर हूँ तूने मुझे आग से बनाया और उसे मिट्टी से बनाया*(सूरह अराफ, आयत न 11-12)*

गुनाह से नुक़सानात:

गुनाह इन्सान को अल्लाह से दूर सवाब से महरूम और अज़ाब का हकदार बना देता है। हदीस शरीफ में आया है कि गुनाह करने से इन्सान के दिल पर एक स्याह नुक्ता पैदा होता है जो तौबा करने पर दूर होता है लेकिन अगर कोई शख़्स गुनाह करता है और तौबा ना करे तो वह स्याह नुक्ता दिन ब दिन कसरत गुनाह से बढ़ जाता और यहां तक फैलता है कि तमाम दिल को स्याह कर देता है जब नौबत यहां तक पहुंची है तो फिर उसके दिल पर वआज़ व नसीहत का कोई असर नही होता।*(तंबीहूल गफीलिन, जिल्द 1, पेज 157)*

हर मुसलमान पर लाज़िम है कि हमेशा हर गुनाह से बचता रहे।

गुनाह के असरात:

गुनाहों की कसरत की वजह से ईमान बर्बाद होने का डर है। अज़ाब गुनाह के वजह से, जालिम बादशाह गुनाह के वजह से, बीमारी गुनाह के वजह से, रूहानी बीमारी गुनाह के वजह से, रंज व गम गुनाह के वजह से, दुश्मनों का डर गुनाह के वजह से, गुमराही गुनाह के वजह से, हर परेशानी गुनाहो के वजह से और आख़िरत का अज़ाब भी गुनाहो के वजह से। सलामती इसी में है कि दुनिया की मोहब्बत दिल से लिकाल दे, सिर्फ दौलत के लिये न जिये, ख़्वाहिसात की पैरवी न करे (1) इसी लिये खाया जाय कि भूक मिट जायेए(2) कपड़े इसी लिये इस्तेमाल में लाये जायें जो सतर के लिये काफी हो (3) मकान इसी के लिये बनाया जाय जो सर्दी व गर्मी से पनाहगाह साबित हो सके। ज़रूरियात को बहुत ही महदूद यानी कम से कम कर दें तो असराफ फजूल खर्ची, तसन्नो और रियाकारी से महफूज रह सकते हैं। इन्सान की ज़रूरियात कम हो जायें तो मुख्तसर आमदनी में घरेलू अख़राजात की तकमील मुमकिन हो जाती है। नाजायज़ और हराम तरीक़ों से कमाने की हाजत उसी वक्त महसूस होती है जब इन्सान के अख़राजात में ज़बरदस्त इजाफा हो जाता है। इन हालात में हुदूद से

तजावुज़ करते हुए मुबाहात के मैदान में कदम रखने और आराम व आसायश की वुसअत के दरवाज़े खोलना मुश्तहबात व मकरुहात तक पहुंचा देता है। रफ्ता रफ्ता इन्सान मुहर्रमात का इरतेकाब करने से भी बाज़ नही रहता। इस्लाम की सरहदें यहां तक ख़त्म हो जाती हैं आगे कुफ्र की वादी जुल्मात है।

बन्दगी रब का तकाज़ा यह है कि वाजिवात, सुन्नत और नवाफिल अदा किये जायें और मरते दम तक इस पर कायम रहें। जवाले नेमत उस वक्त शुरू होता है जब इन्सान मुश्तबहात और हराम में पड़ जाता है। सलामती और ईमान की हिफाज़त तो खौफ व उम्मीद के दरम्यान है।

गुनाह की दो किस्में है- गुनाहे सगीरा (छोटे छोटे गुनाह) गुनाहे कबीरा (बड़े बड़े गुनाह) गुनाहे सगीरा नेकियों और इबादतों की बरकत से माफ हो जाते हैं। लेकिन गुनाहे कबीरा उस वक्त तक माफ नही होते जब तक कि आदमी सच्ची तौबा करके अहले हुकूक से उनके हुकूक माफ न करा ले।

गुनाहे कबीरा किस को कहते हैं? गुनाहे कबीरा हर उस गुनाह को कहते है जिस से बचने पर खुदावन्दे कुद्दूस ने मगफिरत का वादा फरमाया है। (हाशिया बुखारी स. 36) और बाज उलमाए किराम ने फरमाया कि हर वह गुनाह जिसके करने वाले पर अल्लाह व रसूल ने वईद सुनाई या लानत फरमाई, या अजाब व गजब का जिक्र फरमाया वह गुनाहे कबीरा है*(फुयूजुलबारी जि. 1. स. 405)*

गुनाहे कबीरा की तादाद बहुत ज्यादा है मगर

उनमें से चन्द मशहूर गुनाहे कबीरा को हम यहां जिक्र करते हैं जो ये है (1) शिर्क करना (2) जादू करना (3) खूने नाहक करना (4) सूद खाना (5) यतीम का माल खाना (6) मैदाने जिहाद से भाग जाना (7) पाक दामन मोमिन औरतों, मर्दों पर जिना की तोहमत लगाना (8) जिना करना (9) इगलाम बाजी करना (10) चोरी करना (11) शराब पीना (12) झूट बोलना और झूटी गवाही देना (13) जुल्म करना (14) डाका डालना (15) मां बाप को तकलीफ देना (16) हैज व निफास की हालत में बीवी से सोहबत करना (17) जुआ खेलना (18) सगीरा गुनाहों पर इसरार करना (19) अल्लाह की रहमत से ना उम्मीद हो जाना (20) अल्लाह के अज़ाब से बे खौफ हो जाना (21) नाच देखना (22) औरतों का

बे पर्दा होकर फिरना (23) नाप तौल में कमी करना (24) चुगली खाना (25) गीबत करना (26) मुसलमानों को आपस में लड़ा देना (27) अमानत में खियानत करना (28) किसी का माल या जमीन व सामान वगैरह गसब कर लेना (छीन लेना) (29) नमाज रोजा और हज व जकात वगैरह फराइज को छोड़ देना (30) मुसलमानों को गाली देना, उनसे नाहक तौर पर मार पीट करना वगैरह वगैरह सैकड़ों गुनाहे कबीरा है- जिन से बचना हर मुसलमान मर्द व औरत पर फर्ज है और साथ ही दूसरों को भी उन गुनाहों से रोकना लाजिम और जरूरी है।

हदीस शरीफ में है कि अगर किसी मुसलमान को कोई गुनाह करते देखे तो उस पर लाजिम है कि अपना हाथ बढ़ा कर उसको गुनाह करने से रोक दे और अगर हाथ से उसको रोकने की ताकत नही रखता, तो ज़बान से मना करदे और को अगर इसकी भी ताकत न हो तो कम से कम अपने दिल से उस गुनाह बुरा समझ कर उससे बेज़ारी ज़ाहिर करदे। और यह ईमान का निहायत ही कमजोर दर्जा है। *(मिश्कात जि. 2 स 436)*

और एक हदीस में यह भी आया है कि कोई आदमी किसी कौम में रह कर गुनाह का काम करे और वह कौम कुदरत रखते हुए भी उस आदमी को गुनाह से न रोके तो अल्लाह तआला उस एक आदमी के गुनाह के सबब पूरी कौम को उनके मरने से पहले अजाब में मुब्तला फरमाएगा। *(मिश्कात जि. 2 स. 437)*

गुनाहों से दुनियावी नुकसान:-

गुनाहों से नुकसान आखिरत और अज़ाब जहन्नम की सजायें और कब्र में क़िस्म क़िस्म के अजावों में मुब्तला होना इससे तो हर मुसलमान बाक़िफ है। मगर याद रखो कि गुनाहों की नहूसत इन्सान को दुनिया में भी तरह तरह के नुकसान पहुंचते रहते हैं जिनमें से चन्द यह हैं। (1) रोज़ी कम होना (2) बलाओं का हुजूम होना (3) उम्र घट जाना (4) दिल में और बाज़ मरतबा तमाम बदन में अचानक कमज़ोरी पैदा होकर सेहत खराब हो जाना (5) इबादतों से महरूम हो जाना (6) अक्ल में फतूर पैदा हो जाना (7) लोगों की नज़रों में ज़लील व ख़्वार हो जाना (8) खेतों और बाग़ों की पैदावार में कमी हो जाना (9) नेमतों का छिन जाना (10) हर वक्त दिल का परेशान रहना (11) अचानक ला इलाज बीमारी में

मुब्तला हो जाना (12) अल्लाह तआला और उसके फरिश्तों और उसके नेक बन्दों की लानतों में गिरफ्तार हो जाना (13) चेहरे से ईमान का नूर निकल जाने से चेहरे का वे रौनक हो जाना (14) शर्म व गैरत का जाता रहना (15) हर तरफ से जिल्लत, रूसवाईयों और नाकामियों का शिकार हो जाना (16) मरते वक़्त मुंह से कलमा न निकलना वगैरा गुनाहों की नहूसत से बड़े बड़े दुनियावी नुकसान हुआ करते हैं।

हर गुनाह की दस बुराईयां हैं:-

गुनाह से दस बुराईयां होती हैं। (1) जब बन्दा कोई गुनाह करता है तो अल्लाह तआला को गुस्सा दिलाता है और वह अपने गुस्सा को इस्तेमाल करने पर क़ादिर है। (2) गुनहगार इब्लीस मलउन को खुश करता है। (8) गुनाह के सबब जन्नत से दूर हो जाता है। (4) दोज़ख़ के क़रीब हो जाता है। (5) इसने अपनी जान को तकलीफ पहुंचाई। (6) अपने बातिन को नापाक कर दिया (7) अपने मुत्तालिका फरिश्तों को अज़ियत पहुंचाई (8) हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ग़मगीन किया। (9) अपने गुनाह पर आसमान ज़मीन और दिगर मख़्लूक़ात को गवाह बनाया (10) उसने अज़मते इन्सानियत की बेक़दरी और रब तआला की नाफरमानी की। (तफ़सील के लिये देखें हमारी किताब "गुनाह और अज़ाबे इलाही") ।

दुनियादारी का नाम ही गुनाह है

मुसलमानों की परेशानी दुनियादारी के वजह से: कुरआन में अल्लाह फरमाता है : **"यही (दुनियादार) लोग हैं जिन्होंने खरीद (अपना) ली आखिरत के बदले दुनिया की ज़िन्दगी तो उनसे ना आजाब हल्का किया जाएगा और ना वह (उसे) मदद किए जाएंगे"** (सुरह: बकरा, आयत न 86)

दुनिया की मुहब्बत सब से बड़ा गुनाह है:-

अल्लाह तआला ने हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम की तरफ वही की ऐ मूसा! दुनिया की मुहब्बत में मशगूल न होना, मेरी बारगाह में इस से बड़ा कोई गुनाह नहीं है।

रिवायत है कि हज़रते मूसा अलैहिस्सलाम एक रोते हुए शख़्स के पास से गुजरे, जब आप वापस हुए तो वह शख़्स वैसे ही रो रहा था, मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से अर्ज़ किया या अल्लाह! तेरा बन्दा तेरे डर से रो रहा है, अल्लाह तआला ने कहा, ऐ मूसा! अगर आँसू के रास्ते उस का दिमाग़ बाहर निकल आए और उसके उठे हुए हाथ टूट जायें तब भी मैं उसे नहीं माफ करूँगा, क्योंकि यह दुनिया से मुहब्बत रखता है। *(मुकाशिफतुल कुलूब, बाब 31)*

दुनिया की मुहब्बत तमाम गुनाहों की जड़ है :-

हदीस : हुजूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : दुनिया की मोहब्बात तमाम गुनाहों की जड़/असल है। *(मुकाशिफतुल कुलूब, बाब 31)*

शैतान के रास्ते

हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारे सामने एक लकीर खीची और फ़रमाया यह अल्लाह का रास्ता है, फिर आपने उस लकीर के दायें बायें कुछ और लकीरें खींची और फरमाया यह शैतान के रास्ते हैं जिन के लिए वह लोगों को बुलाता रहता है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 16 , पेज 107)

ख्वाहिश वालो पर सख़्त अज़ाब

अल्लाह फ़रमाता है : **ख़्वाहिश के पीछे न जाना कि तुझे अल्लाह की राह से बहका देगी बेशक वो जो अल्लाह की राह से बहकाते हैं उन के लिये सख़्त अज़ाब है इस पर कि वो हिसाब के दिन को भूल बैठे।** (सूरह साद, आयत न 26)

परेशानी की वजह : आज मुसलमान ख़्वाहिशात का गुलाम बने हुवे है और सब्र का दामन छोड़ दिये है इसलिए परेशान है ।

कुरान से हुक्म नही मान रहे है

अल्लाह फ़रमाता है : **ऐ मुसलमान अल्लाह के उतारे पर (कुरआन के मुताबिक)**

हुक्म कर और उनकी (शैतानी) ख्वाहिशों पर न चल और उनसे (शैतान से) बचता रह कि कहीं तुझे लग़ज़िश (भटका) न दे दें (सुरह माएदा, आयत न 49)

नाफरमान की इबादत बेकार

अल्लाह फ़रमाता है : **ऐ ईमान वालों अल्लाह का हुक्म मानो और रसूल का हुक्म मानो और अपने कर्म बातिल न करो।** (सूरह मुहम्मद आयत न. 33)

नाफ़रमानो की तबाही

अल्लाह फ़रमाता है : हाँ यह जो तुम हो बुलाए जाते हो कि अल्लाह की राह में ख़र्च करो तो तुम में कोई बुख्ल करता है और जो बुख्ल करे वह अपनी ही जान पर बुख्ल करता है और अल्लाह बेनियाज़ है और तुम सब मोहताज़ और अगर तुम मुंह फेरो तो वह तुम्हारे सिवा और लोग बदल लेगा फिर वो तुम जैसे न होंगे। (सूरह मुहम्मद, आयत नो. 38)

नाफ़रमनो के लिये दर्दनाक अज़ाब

अल्लाह फ़रमाता है : अगर तुम फ़रमान मानोगे अल्लाह तुम्हें अच्छा सवाब देगा और अगर फिर जाओगे जैसे पहले फिर गए तो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब देगा।(सूरह फतह, आयत न. 16)

हुक्म नही मानने वाला परेशान रहेगा

अल्लाह फ़रमाता है : **जो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म माने अल्लाह उसे बाग़ों में ले जाएगा जिनके नीचे नहरें बहें, और जो फिर जाएगा उसे दर्दनाक अज़ाब फ़रमाएगा।** (सूरह फतह, आयत न. 17)

परहेजगारी परेशानी से निजात का जरिया

अल्लाह फ़रमाता है : **अल्लाह बचाएगा परहेज़गारों को उनकी निजात की जगह, न उन्हें अज़ाब छुए और न उन्हें ग़म हो।** (सूरह जुमर, आयत न. 61)

इस्लाम फैलाने वाले को अल्लाह की मदद

अल्लाह फ़रमाता है : **ऐ ईमान वालो अगर तुम खुदा के दीन की मदद करोगे अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम जमा देगा।** (सूरह मुहम्मद, आयत न. 7)

जानबूझ कर नाफरमानी

अल्लाह फ़रमाता है : **ऐ ईमान वालो अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म मानो और सुन सुनाकर उससे न फिरो।** (सूरह अनफाल, आयत न 20)

इस्लाम के मुताबिक जीने वाला नुकसान में नही

अल्लाह फ़रमाता है : अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमाँबरदारी करोगे तो तुम्हारे किसी काम तुम्हें नुक़सान न देगा बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है (सुरहः हुजरात, आयात न 14)

दुआ कुबूल नही

कुरान में है : दुआ कुबूल फ़रमाता है उनकी जो ईमान लाए और अच्छे काम किये। (सूरह शूरा, आयत न. 26)

दुनियादार अल्लाह की रहमत से दूर

कुरान में है : **अल्लाह की रहमत नेकों से क़रीब है**। (सूरह-अराफ, आयात 56)

अल्लाह फ़रमाता है :"ऐ ईमान वालो हुक्म मानो अल्लाह का और हुक्म मानो रसूल का और उनका जो तुममें हुकूमत वाले हैं फिर अगर तुममें किसी बात का झगड़ा उठे तो उसे अल्लाह और रसूल के हुजूर रूजू (पेश) करो अगर अल्लाह व क़यामत पर ईमान रखते हो, यह बेहतर है और इसका अन्जाम सबसे अच्छा"
(कंज़ूल ईमान, सुरहः निसां, आयत न. 60)

वजह : आज मुसलमान का हाल ये है कि कुरान और हदीस के मुताबिक फैसला

नही मानता बल्कि थाना, कोर्ट, नेता के पीछे भागता है ये ही परेशानी की वजह है

नाफ़रमानों को जिल्लत का अज़ाब

अल्लाह फ़रमाता है : : अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करे और उसकी कुल हदों से बढ़ जाए अल्लाह उसे आग में दाख़िल करेगा जिसमें हमेशा रहेगा और उसके लिये ख़्वारी (ज़िल्लत) का अज़ाब है। *(कंज़ूल ईमान, सुरह: निसा, आयत न. 14*

अहादीस में परेशानी का सबब

हदीस : अबुल बुकतारी रदियल्लाहू अन्हु फरमाते है : के मुझे सहाबी रसूल ने खबर दी के नबी करीम सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम ने फरमाया: "जब तक लोग गुनाहों की कसरत की वजह से सज़ा हकदार नही हो जायेंगे तब तक हलाक़ (परेशान) नही होंगे" जाबिर बिन नाफिर रदियल्लाहु अन्हु फरमाते है के जब काबा फतह हुआ तो मुसलमान आपस में बैठ कर रोने लगे, हजरत अबू दर्दा रदियल्लाहु अन्हु भी रो रहे थे मैंने उनसे रोने का सबब पूछा के ताज्जुब है के आप ऐसे दिन रो रहे है जिस दिन अल्लाह तआला ने इस्लाम को इज़्ज़त वो गलबा अता किया है और शिर्क और मुश्रिकिन को जलील व रुसवा किया है? अपने फरमाया के ए जाबिर! छोड़ दो, जब मखलूक अल्लाह तआला की नफरमानी करती है तो वो अल्लाह तआला के नजदीक किस कदर बेकार हो जाती है, हालांकि वो ताकत और गल्बा वाली उम्मत होती है।

यानी जो मुश्रिकिन जलील और हलाक़ किये गए वो अल्लाह की नाफरमानी के वजह से और यही सोच कर रो रहे *थे(इब्ने अबिददुनिया)*

गुनाहों के वजह से अज़ाब

हदीस : हजरते उम्मे सलमा रदिअल्लाहु अन्हा फरमाती है के रसूलल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया: " जब जमीन पर गुनाह फैल जाता है तो अल्लाह तआला जमीन पर रहने वाले लोगो पर अपना अजाब नाजिल कर देता है" उम्में सलमा रदिअल्लाहु अन्हा फरमाती है के मैने अर्ज़ किया या

रसूलल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम! खवाह इन (लोगो) में नेक व सच्चे लोग भी हो तब भी अजाब नाज़िल होता है? अपने फरमाया के " हां खवाह उनमें नेक लोग भी मौजूद हो आम लोगो की तरह वो भी अजाब में गिरिफ्तार और मुब्तिला किया जाते है फिर वो (नेक लोग) अल्लाह तआला की रहमत की तरफ लौटाए जाते है। (मुसनद अहमद)

मोबलिचिंग दुनियादारी के वजह से

हदीस : हजरत सोबान रदिअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल सल्लाहोअलैहि वसल्लम ने फरमाया अन करीब तमाम धर्म की कौमे तुम पर यूं टूट पड़ेगी जैसे खाने वाले खाने के बर्तन पर टूट पड़ते हैं सहाबा रदिअल्लाह अन्हु ने कहा क्या ऐसा मुसलमानों की आबादी की कमी के वजह से होगा आपने फरमाया मुसलमान उस जमाने में ज्यादा होंगे लेकिन सैलाब की झाग (कोई काम का नही) की तरह, दुश्मन के दिल से मुसलमानों का रोब व दबदबा निकल जाएगा (यानी मुसलमानों से काफिर नहीं डरेंगे) तुम्हारे दिल में वहन डाल दी जाएगी सहाबा रदिअल्लाहु अन्हुम ने पूछा कि वहन क्या चीज है आपने फरमाया दुनिया से मोहब्बत और मौत से नफरत*(सुनन इब्ने दाउद, हदीस न. 2245)*

दुनियादारी के वजह से कलमा रद्द

हदीस : हज़रत अनस बिन मलिक रदिअल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमायाः " कलमा बंदों से खुदा के अजाब को रोकता है जब तक के बंदे दुनिया के मामले को दिन के मामले पर तरजीह न दे, लेकिन जब वो अपनी दुनिया के मामले को दिन के मामले पर तरजीह दे और फिर कलमा पढ़े तो ये कलमा उन पर रद्द कर दिया जाता है और अल्लाह तआला फरमाता है के तुम झूठे हो।*(इब्ने अबिददुनिया)*

दीन के नाम पर दुनिया कमाना

हदीस : हज़रत अबू हुरैरा रदिअल्लाहु अन्हु से रिवायत है के रसूलल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमायाः आख़री जमाने में कुछ लोग जाहिर होंगे जो दिन का नाम ले कर दुनिया को हासिल करेंगे, लोगों को दिखाने के लिए

रहबाना (सूफियाना) लिबास पहनेंगे, इनकी ज़बाने शक्कर से ज्यादा मीठी होंगी और उनके दिल भेड़ियों के दिल जैसे होंगे अल्लाह तआला फरमाएगा" किया तुम मुझे धोका देना चाहते हो? मेरे सामने जराइत दिखाते हो? मुझे अपनी कसम है में ऐसे लोग पर ऐसा फितना जरूर भेजूंगा जो इनके अकलमंद शख्स को भी हैरान वो सर गर्दा करके छोड़ेगा। *(इब्ने अबिददुनया)*

नाम का मुसलमान

हदीस : हजरत हसन रज़िअल्लाहु अन्हु फरमाते है के रसूलल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया : जब लोग इल्म का इज़हार करेंगे और अमल को जाया करेंगे और ज़बानी कलमा से मुहब्बत का इजहार तो करेंगे मगर दिलो में बुग्ज वो किना रखेंगे और रिश्तों और नातो को तोड़ेंगे तो अल्लाह तआला उनको लानत का मुस्तहिक बना देगा और उनको अंधा बहरा (हिदायत से खाली) कर देगा।(दुर्रे मंसूर)

तरह-तरह के बीमारी ,ज़ालिम बादशाह और दुशमन

हदीस : हज़रत इब्ने उमर रदियाल्लाहु अन्हु फरमाते है के रसूलल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम के पास मुहाजरीन सहाब के दस लोग बैठे हुए थे मैं उनमें से दसवां आदमी था, हुजूर सलल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने चेहरा मुबारक के साथ हमारी तरफ मुतवज्जह हुए और फरमायाः " जिस कौम में बेहयाई आम हो जाए और लोग उसका खुल्लम खुल्ला बार-बार करने लगे तो वो कौम मुख्तलिफ बीमारी और परेशानी और ताऊन में मुब्तिला कर दी जाती है जो बीमारी उनसे पहले गुजरे हुए लोगों में मौजूद न थी और जो कौम नाप तोल में कमी करती है वो कहतसाली (बेरोजगारी), मशक्कत वो शिद्दत और बादशाह(प्रधानमंत्री) के जुल्म में मुब्तिला कर दी जाती है और जो कौम अपने माल की जकात अदा नही करती वो रहमत की बारिश से महरूम (दूर) कर दी जाती है अगर जानवर न होते तो उनपर बरिश ही न बरसती और जो कौम अहद शिकनी/ वादा ख़िलाफी करती हैं तो अल्लाह तआला इनपर इनके गैर (दूसरे धर्म जैसे बजरंग दल) से दुश्मन मुसल्लत कर देते है जो उनके माल वो जायदाद पर कबजा कर लेते हैं। और जब लोगों के हुक्मरान अल्लाह तआला के नाज़िल

करदा अहकाम वो कुरान के मुताबिक अमल नहीं करते और कुरान मजीद के अहकाम को अहमियत और तरजीह नहीं देते तो अल्लाह तआला उनको आपस (लड़ाई) के अजाब में मुब्तिला कर देता हैं। (इब्ने माजा)

आपस में लड़ाई की वजह

हदीस : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसउद रदिअल्लाहु अन्हु फरमाते है के रसूलल्लाह सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम ने फरमाया: " पिछली उम्मत का हाल ये था के जब उनमें कोई शख्स कोई गुनाह करता तो रोकने वाला उसको फहमाइस (फॉर्मिलिटी) के तौर पर रोकता फिर अगले दिन वही शख्स (रोकने वाला) के साथ उठता बैठता और खाना पिता जैसे उसने पिछला रोज उसको गुनाह करता देखा ही न था, जब अल्लाह तआला ने बाज़ लोगों के ऐसे हालात देखे तो उनके दिलो को आपस में बिगाड़ दिया और अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हजरत दाऊद अलैहिस सलाम और ईसा इब्ने मरियम अलैहिस सलाम की जबानी उनपर लानत फरमायी और इरशाद फरमाया: " तर्जुमा : " इसका सबब ये हुआ के उन्होंने नाफरमानी की और वो हद से तजावुज़ किया करते थे " (उसके बाद आपने फरमाया) उस ज़ात की कसम जिसके कब्जे में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जान है तुम लोग नेकी का हुक्म जरूर दो और बुराई से रोका करो और बेवकुफ (जालिम) का हाथ जरूर पकड़ो और उसको हक बात की तरफ माइल करो, वरना अल्लाह त'आला तुम्हारे दिलो में भी एक दूसरे का फसाद और बिगड़ डाल देंगे और तुम पर भी इसी तरह लानत करेगा जिस तरह उनपर (पिछली कौम पर) लानत फरमायी। (तिर्मिज़ी)

बुरे लोगो के साथ नेक लोग भी हलाक

हदीस : इब्राहीम बिन उमरो अल उनयानी फ़रमाते हैं कि "अल्लाह त'आला ने हज़रत यूशा बिन नून अलैहिस्सलाम की तरफ़ वह्यी फ़रमाई कि मैं तुम्हारी क़ौम में से चालीस हज़ार नेक लोगों और साठ हज़ार बुरे लोगों को हलाक करने वाला हूँ, यूशा बिन नून अलैहिस्सलाम ने अर्ज़ की परवरदिगार! बुरे लोगों को हलाक करना तो ठीक है लेकिन इन नेक लोगों का क्या क़सूर है? अल्लाह त'आला ने फ़रमाया: इन को उन पर गुस्सा नहीं आया और वोह उनके साथ खाते पीते हैं"।

(तंबीहूल गाफ़िलीन, जिल्द1/96)

परेशानी की दूसरी सबसे बड़ी वजह दुनियादारी

आज हर मुसलमान दुनियादार है यानी हर फानी समान को जमा करने में लगा हुआ है और फानी काम को करके अपना कीमती वक़्त बर्बाद कर रहा है कुरान और हदीस में आया है कि दुनियादार की इबादत भी रद्द कर दी जाएगी, इस दौर में शायद ही कोई दीनदार है यानी दीन (आख़िरत) के लिए जी रहा है ।

दुनिया की हक़ीक़त कुरान में:

अल्लाह फरामता है: जान लो कि दुनिया की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल कूद और आराइश और तुम्हारा आपस में बड़ाई मारना और माल और औलाद में एक दूसरे पर ज़ियादती (कम्पटीशन करना) चाहना उस मेंह की तरह जिसका उगाया सब्ज़ा किसानों को भाया फिर सूखा कि तू उसे ज़र्द देखे फिर रौंदन हो गया और आख़िरत में सख़्त अज़ाब है और अल्लाह की तरफ़ से बख़्शिश और उसकी रज़ा और दुनिया का जीना तो नहीं मगर धोखे का माल।*(सूरह हदीद, आयत नो. 20)*

दुनिया की हक़ीक़त : दुनिया एक जगह है जिसमें सफर करके आख़िरत तक पहुचना है, इसमें सफर करने के लिए इस्लाम के सीधे रास्ता पर चलना होता है वरना शैतान मौके की ताक में रहता है जैसे ही कोई इस्लाम के खिलाफ़ काम किया उसे शैतान लपक लेगा, दुनिया में ठहरने की जगह नही, जैसा कि हमारे आक़ा ﷺ ने फरमाया: **तुम इस दुनिया मे इस तरह रहो गोया तुम परदेशी हो या राह चलते मुसाफिर हो।***(बुखारी शरीफ)*

इस फानी दुनिया मे अच्छा घर बना कर रहने की जगह नही, यहाँ दुकान खोलकर माल जमा करने की जगह नही, इस दुनिया में मौज मस्ती करने की जगह नही, यहाँ जरूरत से ज्यादा समान जमा करने की जगह नही, यहां आलीशान सवारी (बाइक, कार, बुल्लेट) में सवार होने की जगह नही और जो ऐसा करेगा वो तो दुनिया मे ही रह जाएगा और आखिरत (जन्नत) का सफ़र तय किये बगैर जहन्नम में चला जायेगा। जैसा कि जैसा कि हमारे आक़ा ﷺ ने

फरमाया: "जो नर्म व मुलायम बिस्तर पर सोए और लिबासे शोहरत पहने और आलीशान सुवारी पर सवार हो और मन पसन्द खाने खाए वोह जन्नत की खुश्बू भी नहीं सूंघ सकेगा।"

फिर फ़रमाया : हजरत उस्मान रजियल्लाहु अन्हु का क़ौल है कि प्यारे आका सललल्लाहो अलैहे व सल्लम ने फ़रमाया है कि "इन चीज़ों के सिवा आदम के बेटे को किसी चीज़ पर कोई हक़ नहीं (1) रहने के मकान (2) तन ढकने को कपड़ा (3) खुश्क रोटी (4) पानी।" (तिर्मिज़ी)

हदीस की तशरीह : 1. रहने का घर मतलब 1 या 2 रूम लेकिन आज लालची मुसलमान, लोगो को दिखाने के लिए घर बना रहा है, गाड़ी रखने का अलग घर, गेस्ट रूम अलग, बेड रूम अलग, अटेच लेटरिंग बाथरूम यानी अपना घर और शैतान का घर एक साथ, यानी सिर्फ दुनियादारी के लिए घर बना रहा।2. तन ढकने का कपड़ा मतलब जिस्म को नंगा न रखे और सतर छिप जाए ताकि बेहयाई न फैले लेकिन अफसोस आज नाफ़रमान मुसलमान शोहरत का कपड़ा पहनना पसंद करता है और वो भी चुस्त कपड़ा जिस कपड़ा के बारे में हमारे आका हुजूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फरमाया की कपड़ा पहनने के बावजूद भी नंगा होंगे। यानी बेहयाई फैलाने वाला कपड़ा। 3. खुश्क रोटी से मुराद गरीबी और फ़क़ीरी जैसा खाना न कि काफिरो जैसा लजीज दार जैसे फ़ास्ट फूड, चायनीज फुड वगैरह लेकिन अफसोस आज मुसलमान काफिरो वाला खाना पसन्द कर रहा है।

4. पानी से मुराद वो पाक पानी जिससे जरूरत के मुताबिक पी कर प्यास बुझाया जाए , लेकिन अफसोस आज काफिरो का बनाया हुवा कोल्ड्रिंक, बियर, शराब वगैरह पी रहे है।

एक बुजुर्ग का कोल है : हज़रते यहिया बिन मआज रहमतुल्लाहू अलैह का क़ौल है कि दुनिया शैतान की. दुकान है, उस में से कुछ न लो, अगर तुम ने कुछ ले लिया तो शैतान तलाश करता हुआ तुमारा दिल तक पहुंच जाएगा।**(मुकाशफतुल कुलूब, बाब न. 31)**

दुनिया मोमिन के लिए कैदखाना

हदीस : हुजूर सल्ललाहो अलैहिस्सलाम ने फरमाया दुनिया मोमिन के लिए कैदखाना और काफिर के लिए जन्नत है।

दुनिया, मोमिन के लिए कैदखाना है : ये दुनिया मोमिन के लिए आरायस (राहत) की जगह नही बल्कि आज़माइस की जगह है। ये दुनिया जंगल की तरह है और इस दुनिया मे शैतान शेर की तरह है और इंसान भेड़िये की तरह है। जैसा कि कुरान पाक में है अल्लाह फरमाता है **"ऐ इंसान खबरदार तुम्हें शैतान फ़ितने (मुसीबत) में न डाले जैसा तुम्हारे मां बाप को बहिश्त (जन्नत) से निकाला "।** (सूरह आराफ, आयात न. 27)

शैतान बोला " **मैं इंसानो को पीस डालूंगा मगर थोड़ा" ।(यानी सिर्फ परहेजगरो के अलावा सबका ईमान छीन कर अज़ाब का हकदार बना देगा)** (सूरह बनी इस्राईल, आयत न. 62) अल्लाह शैतान से बचने का हुक्म दिया है फ़रमाता है : **उनकी (शैतान की) ख्वाहिशों पर न चल और उनसे (शैतान से) बचता रह कि कहीं तुझे लग़ज़िश (डगमगा) न दे दें** (सुरहः माएदा, आयत न. 50) बचने से मुराद ईमान का बचना न कि जान, जान तो एक दिन जाना ही है। इंसानो के बारे में अल्लाह फरमाता है : **आदमी कमज़ोर बनाया गया।** (सूरह निसा, आयत न. 28)

कुरआन और अहादीस में दुनिया की खराबियां और दुनिया से तवज्जोह हटा कर आखिरत की जानिब माइल करने के लिए बेशुमार आयतें और रिवायतें हैं बल्कि अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम को भेजने का मकसद दुनिया की हकीकत बता कर दुनियादारी से बचाना था। कुछ आयते और रिवायतें नीचे नकल करता हूँ जिसे पढ़कर आप दुनिया से बचे।

आयत न. 1 (कुरआन में अल्लाह फ़रमाता है) **: "यही (दुनियादार) लोग हैं जिन्होंने खरीद (अपना) ली आखिरत के बदले दुनिया की जिंदगी तो उनसे ना आजाब हल्का किया जाएगा और ना वह (उसे) मदद किए जाएंगे"** (सुरहः बकरा, आयत न 86)

परेशानी की वजह : आज का मुसलमान दुनिया को अपना लिया है और आख़िरत को भूल गया है। अल्लाह की इबादत के लिए वक़्त नही मिलता लेकिन दुनियादारी और अल्लाह की नाफरमानी करने के लिए पूरा वक़्त मिलता है. इसी लिए तो आज मुसलमान परेशान है।

आयत न. 2 (कुरआन में अल्लाह में फरमाता है) **: जिन्होंने अपने दीन को खेल तमाशा बना लिया और दुन्या की ज़िन्दगी ने उन्हें धोखा दिया तो आज हम उन्हें छोड़ देंगे।** (सूरह अराफा, आयत नो. 51)

परेशानी की वजह 2 : इस आयत के मुताबिक अल्लाह इस दौर के नाफ़रमान मुसलमानों को छोड़ दिया है यानी कोई मदद नही कर रहा है क्योंकि नाफ़रमान मुसलमानों ने दीने इस्लाम को खेल तमाशा बना कर रख दिया है आप खुद देखे शादी निकाह में गाना बजाना, घरों में टीवी के जरिये नाच गान, मोबाइल में गाना और मौज मस्ती, मोहर्रम में ढोल ताशा, दरगाहों में कव्वालियां, बच्चे के पैदाइस में बर्थडे पार्टी, मस्जिदों में दुनियावी बातें, ताली, म्यूजिक, कपड़ा बेहयाई वाला, खाना पीना सुन्नत के ख़िलाफ़ ये सब शैतानी काम है इससे बेहयाई फैल चुकी है। जो आज हर मुसलमान के घर में हो रहा है। इसलिए आज हर मुसलमान परेशान है।

आयत न. 2 (कुरआन में अल्लाह में फरमाता है) **: दुनिया की ज़िन्दगी तो यही धोखे का माल है।** (सुरह इमरान, आयत न. 185)

आयत न. 3 : **तुम दुनिया और आख़िरत के काम सोच कर करो** (सुरह बकरा, आयत न. 220)

आयत न. 4 : **दुनिया का बरतना थोड़ा है और डर वालों के लिये आख़िरत अच्छी और तुम पर तागे (जरा) बराबर जुल्म न होगा।** (सुरह निसा, आयत न. 77)

इन दोनों आयतों पर ग़ौर व फ़िक्र : अल्लाह फरमा रहा कि तुम पर तागे बराबर यानी जरा सा भी जुल्म न होगा फिर आज मुसलमानों पर जुल्म कैसा आज मुसलमान परेशान क्यों। इसका मतलब तो यही की आज मुसलमान इस आयत के मुताबिक दुनिया और आख़िरत का काम सोच समझ कर नही कर रहा तो

इसका अंजाम तो मुसलमान पायेगा, हक़ीक़त तो ये है कि मुसलमानों ने मौका दिया जुल्म करने का।

आयत न. 7 : **अल्लाह जिसके लिये चाहे रिज़्क कुशादा और तंग करता है और क़ाफ़िर दुनिया की ज़िन्दगी पर इतरा गए और दुनिया की ज़िन्दगी आख़रित के मुक़ाबले नहीं मगर कुछ दिन बरत (गुजार) लेना।** (सुरह राअद, आयत न. 26)

आयत न. 8 : **माल और बेटे यह जीती दुनिया का सिंगार है और बाकी रहने वाली अच्छी बातें।** (सुरह काफ, आयत न. 46)

आयत न. 9 : क्या हम तुम्हें बतादें कि सब से बढ़कर नाक़िस (दूषित) अमल किन के हैं उनके जिनकी सारी कोशिश दुनिया की ज़िन्दगी में गुम गई और वो इस ख़याल में हैं कि अच्छा काम कर रहे हैं। (सुरह का'फ, आयत न. 103-104)

आयत न. 11 : जो माल तुझे अल्लाह ने दिया है उससे आख़िरत का घर तलब कर और दुनिया में अपना हिस्सा न भूल और एहसान कर जैसा अल्लाह ने तुझपर ऐहसान किया और ज़मीन में फ़साद न चाह, बेशक अल्लाह फ़सादियों को दोस्त नहीं रखता। (सुरह कसस, आयत न. 73)

परेशानी की वजह : अल्लाह फरमा रहा है कि है जो माल पास में है उससे आख़िरत का घर तलब कर यानी अल्लाह कर राह में खर्च करके इसका ठिकाना जन्नत में बना ले, लेकिन आज हम अल्लाह का इस फ़रमान के खिलाफ काम कर रहे है और कब्र को भूलकर दुनिया मे टाइल्स और मार्बल का घर बना रहे है। अटेच लेटरिंग बाथरूम बना रहे है जहाँ शैतान रहता है। यानी लेटरिंग रूम में शैतान रहता है। अब शैतान जो दुश्मन है उसे अपने साथ रखेंगे तो परेशानी तो होगी इसलिए मुसलमान परेशान

आयत न. 12 : यह दुनिया की ज़िन्दगी तो नहीं मगर खेल कूद और बेशक आखिरत का घर जरूर वही सच्ची ज़िन्दगी है क्या अच्छा था अगर जानते। (सुरह अंकबूत, आयत न. 64)

परेशानी की वजह : दुनिया की ज़िदगी की मिसाल खेल-कूद से दी गइ यानी जो भी आख़िरत और अल्लाह की इबादत को भूल कर दुनिया की ज़िंदगी अपना तो

अपने पैर में कुल्हाड़ी मारा, जिस तरह नाबालिग बच्चे अपनी कीमती वक़्त खिलौनों से खेल-खुद में बिता देते है और बूढ़े होकर पछताते है। उसी तरह आज का मुसलमान काफिर का बनाया हुआ इलेक्ट्रॉनिक सामान खरीद रहा है और अपने घरो में जमा कर रहा है जैसे टीवी, पंखा, कूलर, फ्रीज़, मोबाइल, कार, बाइक, मोटर वगैरह ये सब खिलौना है और मुसलमान शैतान के सामने बच्चों की तरह है। शैतान जब चाहता है उसे परेशान करता है और रुलाता है।

इसीलिए हमारे बुजुर्गाने दीन फ़कीरी ज़िन्दगी अपना कर इस दुनिया मे खेल कूद से बच गए।

आयत न. 14: हरगिज़ तुम्हें धोखा न दे दुनिया की ज़िन्दग़ी और हरगिज़ तुम्हें अल्लाह के हुक्म पर फ़रेब न दे वह (शैतान) बड़ा फ़रेबी।(सुरह फ़ातिरआयत 5)

परेशानी की वजह : हक़ीक़त में देखा जाए तो इस दौर में दुनिया मुसलमानों को धोखा दे दी है और शैतान भी फरेब दे दिया है इसलिए मुसलमान परेशान।

आयत न. : 15 अल्लाह ने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में रूसवाई का मज़ा चखाया और बेशक आख़रित का अज़ाब सबसे बड़ा, क्या अच्छा था अगर वो जानते। (सुरह जुमर, आयत न. 26)

परेशानी की वजह : जो लोग दुनिया की ज़िंदगी पसंद किया चाहे वो काफिर ही या कोई फ़ासिक उन सबको अल्लाह रुसवाई का मजा चखाया।

आयत : 16: जो आख़िरत की खेती चाहे हम उसके लिये उसकी खेती बढ़ाएं और जो दुनिया की खेती चाहे हम उसे उसमें से कुछ देंगे और आख़रित में उसका कुछ हिस्सा नहीं। (सूरह शूरा, आयत न. 20)

आयत न. 17 : बेशक वो जो अपने पीछे पलट गए बाद इसके कि हिदायत उनपर खुल चुकी थी शैतान ने उन्हें धोखा दिया और उन्हें दुनिया में मुद्दतों रहने की उम्मीद दिलाई। (सूरह मुहम्मद, आयत न. 25)

परेशानी की वजह : जो लोग हिदायत पा चुके थे जब उन्हें शैतान धोखा देकर दुनियादारी में मशगूल कर दिया तो जो बचपन से कुरान को छोड़कर अँग्रेजी

मेडियम पढ़ाई के चक्कर मे ज़िन्दगी गुज़ार दिया उनका क्या हाल होगा , जो हाल है वो आपके सामने है यानी मुसलमान परेशान।

शैतान दुनिया के साथ है।

हज़रते इब्ने हब्स ने कहा: हजरते ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: बेशक शैतान दुनियां के साथ है, माल के साथ उसका मक्र, ख्वाहिशात के वक्त उसकी तेजी और शहवत (लालच) के वक्त उसकी कामयाबी है।(मकाइदुश्शैतान, इब्ने अबिद्दुनिया)

परेशानी की वजह : जो चीज शैतान का है जैसे दौलत, ख़्वाहिशात और लालच उसे कोई अपनाएगा तो वो भी शैतान का हो जाएगा और जो शैतान का होगा वो अल्लाह का नही होगा। अल्लाह की रहमत से दूर होगा, हर खैर व भलाई और बरकत से दूर होगा इस लिए मुसलमान परेशान।

दुनिया की मोहब्बत अल्लाह से दूर कर देती है।

हजरते हसन रज़ियल्लाहु अन्हु का कौल है कि दुनिया की मुहब्बत में डूब कर बनीं इस्राईल (पिछली उम्मत) ने अल्लाह की इबादत को छोड़ कर मूर्ति की इबादत शुरू की थी। (मुकाशिफतुल कुलूब, बाब 31)

शैतान दुनिया के जरिये से गुनाह कराता है

हज़रते अबू उमामा बाहिली रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मबऊस फरमाया गया तो शैतान अपने लश्कर के पास आया, उन्होंने शैतान से कहा एक नबी मबऊस हुआ है और उस के साथ उस की उम्मत (मुसलमान) भी है। शैतान ने पूछा क्या वह लोग दुनिया (दौलत, शोहरत और औरत) को पसन्द करते हैं? उन्होंने कहा हां, शैतान ने कहा कि फिर तो कोई परवाह नहीं, अगर वह मूर्ति को नहीं पूजते तो न पूजें, हम उन्हें तीन बातों में फंसायेंगे।

1. दूसरे की चीज ले लेना (अमानत में खयानत, जैसे चोरी, जमीन या माल में

कब्जा, नाप तौल में कमी, मजदूर का पैसा खा जाना, झूठ बोलकर तिज़ारत करना),

2. दुनियावी समान पर पैसा खर्च करा कर (यानी फिजूल खर्ची, शैतान के राह में पैसा ख़र्च करना)

3. लोगों के हुकूक़ अदा न करना, यही तीन चीजें तमाम बुराईयों की बुनियाद है। (मुकाशफतुल , बाब 31, पेज 201)

अल्लाह की रहमत दुनियादर के लिए नही

हदीस : अगर दुनिया की कद्र अल्लाह के नज़दीक एक मच्छर के पर के बराबर होती तो एक घूंट इसमें से काफिर को न देता ज़लील है जलीलों को दी गई, अल्लाह जब से दुनिया बनाया है कभी इसकी तरफ रहमत की नज़र न फरमाई। (तिर्मिज़ी) (फैजाने आला हज़रत, पेज नंबर 162)

परेशानी की वजह : जब दुनिया की तरफ् अल्लाह अपनी रहमत की नज़र न फ़रमाई तो जो लोग दीन से दूर और दुनिया के करीब हो उसपर भी अल्लाह रहमत की नजर न फ़रमाई। इसलिए मुसलमान परेशान

दुनियादार मुसलमान को अल्लाह मदद नही करता

हिकायत : हजरते मूसा अलैहिस्सलाम एक रोते हुए शख्स के पास से गुजरे, जब आप वापस हुए तो वह शख्स वैसे ही रो रहा था, मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से अर्ज किया या अल्लाह! तेरा बन्दा तेरे डर से रो रहा है, अल्लाह तआला ने कहा, ऐ मूसा! अगर आँसू के रास्ते उस का दिमाग बाहर निकल आए और उसके (दुआ के लिए) उठे हुए हाथ टूट जाये तब भी मैं उसे नहीं माफ करूंगा क्योंकि यह दुनिया से मुहब्बत रखता है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 31)

परेशानी की वजह दुनिया हासिल करना

फरमाने नबवी है जिस की सब से बड़ी तमन्ना दुनिया (यानी दौलत, शोहरत, औरत) हासिल करना है, अल्लाह तआला के यहां उसका कोई हिस्सा नहीं है,

अल्लाह तआला ऐसे के दिल पर चार चीज़ों को मुसल्लत कर देता है। दाइमी (हमेशा) गम, दाइमी मशगूलियत, दाइमी रिज़्क में न बरकती और कभी न पूरी होने वाली आरजूएं।(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 31, पेज 189)

दुनियादार कौम से अल्लाह की नाराजगी

हिकायत : जनाब अम्मार बिन सईद रदीअल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हजरते ईसा अलैहिस्सलाम का एक ऐसी बस्ती से गुजर हुआ जिसके रहने वाले मुख्तलिफ अतराफ और रास्तों पर मुर्दा पड़े हुए थे, आपने अपने हवारियों से फरमाया, यह लोग अल्लाह तआला की नाराज़गी का शिकार हैं वरना इन्हें जरूर दफन किया जाता। हवारियों ने अर्ज की हम चाहते हैं कि हमें उनके हालात का पता चल जाये। हजरते ईसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से दुआ माँगी तो अल्लाह तआला ने फरमाया जब रात आ जाये तो इन से पूछना, यह अपनी हलाकत की वजह बतायेंगे, जब रात हुई तो हजरते ईसा अलैहिस्सलाम ने कहा ऐ बस्ती वालो! एक आवाज आई लब्बैक या रुहुल्लाह! आपने पूछा तुम्हारी यह हालत क्यों है और इस अज़ाब के नुजूल की वजह क्या है? जवाब आया हमने आफियत की ज़िन्दगी गुज़ारी और जहन्नम के मुस्तहिक करार पाये, इस लिए कि हम दुनिया से मुहब्बत रखते थे और गुनाहगारों की पैरवी किया करते थे। आपने पूछा तुम्हें दुनिया से कैसी मुहब्बत थी? जवाब आया जैसे माँ को बच्चे से मुहब्बत होती है। जब हमारे पास दुनिया आ जाती तो हम बहुत ही खुश होते और जब दुनिया चली जाती तो हम निहायत ग़मगीन हो जाते। आपने फ़रमाया क्या वजह है। कि सिर्फ तू ही जवाब दे रहा है और तेरे बाकी साथी खामोश हैं। जवाब मिला ताकतवर पुर-हैबत फरिश्तों ने उनको आग की लगामें डाली हुई हैं, आपने फरमाया फिर तू कैसे जवाब दे रहा है? जवाब मिला में उन में रहता जरूर था मगर उन जैसी बद-आमालियाँ नहीं करता था। जब अज़ाबे इलाही आया तो मैं भी उसकी लपेट में आ गया अब मैं जहन्नम के किनारे पर लटका हुआ हूँ। क्या खबर इस से नजात पाता हूँ या इस में गिर जाता हूँ। हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम ने अपने साथियों से फरमाया नमक से जौ की रोटी खाना, फटा पुराना कपड़ा पहनना और कूड़े के ढेर पर सो जाना, ये दुनिया व आखिरत की भलाई के लिए बहुत उम्दा है। (मुकाशिफतुल कुलूब, बाब 31, 193)